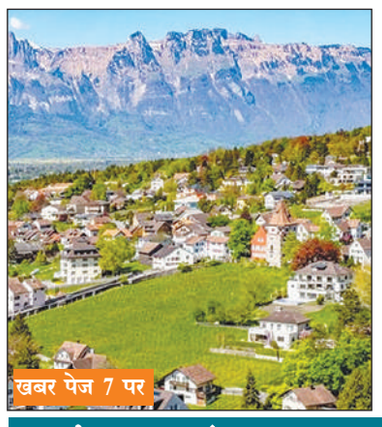

खबर पेज 7 पर

गंभीर समाचार

समय–समाज–संस्कृति

खबर पेज 8 पर

वर्ष - 11 | अंक–16 | पाक्षिक समाचार पत्रिका | कोलकाता, शनिवार 1 – 15 नवम्बर 2025 | मूल्यः 5 रुपये | RNI No.WBHIN/2014/59321, ISSN No. 2456/3005 Kolkata | कुल पृष्ठ – 8

सुविचार

- मेहनत इतनी खामोशी से करो कि सफलता शोर मचा दे।
- आत्मविश्वास ही सफलता की पहली सीढ़ी है।
- ज़िंदगी वही है जो आज है, जो बीत गया वो अनुभव है और जो आने वाला है वो भ्रम।
- दूसरों की गलती से भी सीखा करो, खुद की गलती से सीखने में उम्र कम पड़ जाएगी।
- जितना कठिन संघर्ष होगा, उतनी ही शानदार सफलता मिलेगी।

शेरो-शायरी

कोशिश हमेशा जारी रखो,
किस्मत रूठे पर हिम्मत ना टूटे।
मजबूत इतना इरादा रखो ।

किसी को डर है, की ईश्वर देख रहा है..और किसी को भरोसा है, की ईश्वर देख रहा है।

कपट और पाप उतना ही करना चाहिए, जितना भुगतने का सामर्थ्य हो, क्योंकि कुदरत किसी को नही छोड़ता है।

लोग अक्सर महान बनने के चक्कर में शायद इंसान बनना भूल जाते हैं।

बड़ाबाजार में लगी भीषण आग

निज संवाददाता : कोलकाता के बड़ाबाजार में शनिवार की सुबह भीषण आग लग गई। इस आग की चपेट में कई इमारतें आ गई। भीड़भाड़ वाले इलाके में दमकलकर्मियों को आग पर काबू पाने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ा। ऐसे में आसपास के दुकानदार अपनी दुकानों से सामान निकालने की पूरी कोशिश कर रहे थे।रिपोर्ट के मुताबिक, आज सुबह करीब 5 बजे बड़ाबाजार के एजरा स्ट्रीट स्थित एक बिजली के सामान की दुकान की दूसरी मंजिल पर पहली आग लगी। दमकल विभाग को तुरंत सूचना दी गई।

मोदी-शाह की रणनीति ने नीतीश को बनाया 'मैन ऑफ द मैच'

भाजपा को आता है चुनाव जीतना

- भाजपा–जदयू ने इस पारंपरिक राजनीतिक तर्क को ध्वस्त कर दिया कि बढ़ा हुआ मतदान सत्ता विरोधी होता है।
- 20 साल सत्ता में रहने के बाद भी नीतीश बिहार में सबसे लोकप्रिय चेहरा बने हुए हैं।

निज संवाददाता : बिहार का जनादेश कई मायनों में ऐतिहासिक है। राजग गठबंधन ने सत्ता विरोधी लहर को धता बताते हुए लगातार तीसरी बार सत्ता में वापसी की और 2010 के अपने सर्वोच्च प्रदर्शन के लगभग बराबर की जीत दर्ज की। सत्तारूढ़ गठबंधन के पक्ष में यह प्रबल लहर रिकॉर्ड 67 फीसदी मतदान के रूप में सामने आई, जो बिहार में 75 वर्षों में अब तक का सबसे अधिक मतदान था। महिला मतदाताओं का मतदान प्रतिशत पुरुष मतदाताओं की तुलना में करीब 10 फीसदी अधिक था, जो एक बार फिर परिणामों को प्रभावित करने की उनकी क्षमता को दर्शाता है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आगे बढ़कर चुनावी अभियान का नेतृत्व किया और केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने परदे के पीछे से रणनीति बनाई, तो मुख्यमंत्री नीतीश कुमार मैन ऑफ द मैच बनकर उभरे हैं। 2020 के उस झटके से उबरकर, जब राजग की आंतरिक कलह के बीच उनकी पार्टी अपने सबसे निचले स्तर पर पहुंच गई थी, उन्होंने लगभग भाजपा के बराबर सीटों के साथ वापसी की है, जिससे साबित होता है कि 20 साल सत्ता में रहने के बाद भी वह बिहार में सबसे लोकप्रिय चेहरा बने हुए हैं। यह उस नेता के लिए कोई मामूली उपलब्धि नहीं है, जो अपने स्वास्थ्य को लेकर उठे सवालों और भाजपा द्वारा राजग के मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार के रूप में आधिकारिक तौर पर समर्थन देने से इन्कार के बाद लगभग अदृश्य हो गया था। लेकिन जैसे-जैसे बिहार में चुनावी बुखार चढ़ा, कहानी बदल गई। अचानक नीतीश कुमार अपने शासन के प्रति नकारात्मक भावनाओं के अभाव में एक ऐसे नेता के रूप में सहानुभूति के हकदार बन गए, जो शायद अपना आखिरी चुनाव लड़ रहा था। वह दो दशकों से मुख्यमंत्री के रूप में अति पिछड़े वर्गों एवं महिलाओं के वफादार वोट बैंक के अटूट समर्थन के बारे में बढ़ती चर्चा के बीच चुनाव का केंद्र बन गए। चुनाव से ठीक पहले चतुराई के साथ एक करोड़ से अधिक महिलाओं को 10,000 रुपये की सहायता राशि देने से नीतीश कुमार के लिए चुनाव जीतना सुनिश्चित हो गया। हालांकि नीतीश कुमार को राजग का आधिकारिक मुख्यमंत्री चेहरा घोषित नहीं किया गया था, लेकिन नई सरकार का नेतृत्व किसी और के हाथों में होने की कल्पना करना मुश्किल है, खासकर जद (यू) की शानदार वापसी के बाद। नीतीश कुमार कोई एकनाथ शिंदे नहीं हैं और अगर भाजपा अपने ही किसी नेता पर जोर देकर राजग की नैया को हिला दे, तो यह आश्चर्यजनक होगा, क्योंकि जद (यू) केंद्र में मोदी सरकार का एक अहम आधार स्तंभ है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी के वोट चोरी के आरोप का कोई खास असर नहीं हुआ। इसके साथ ही प्रशांत किशोर की नवगठित जन सुराज पार्टी बुरी तरह विफल हो गई, क्योंकि उसके ज्यादातर उम्मीदवारों की जमानत जब्त हो गई। अपनी ध्वस्त महत्वाकांक्षाओं के मलबे का जायजा लेते हुए किशोर शायद इस बात से कुछ राहत महसूस कर सकते हैं कि उन्होंने चुनावी आख्यान को कुछ हद तक प्रभावित किया। चूंकि उन्होंने बिहार की भीषण गरीबी का मुद्दा लगातार उठाया, इसलिए दोनों प्रतिस्पर्धी गठबंधनों (राजग और महागठबंधन) को रोजगार सृजन और स्वास्थ्य एवं शिक्षा के बुनियादी ढांचे के निर्माण जैसे रोजी-रोटी के मुद्दों पर अपने अभियान गढ़ने पड़े। यहां तक कि भाजपा ने भी अवैध प्रवास के मुद्दे पर ध्रुवीकरण के नारे लगाने के अपने शुरुआती प्रयासों को छोड़ दिया। इस चुनाव से खासकर विपक्ष के लिए कुछ महत्वपूर्ण बातें उभरकर सामने आई हैं, जिसे इस करारी हार के बाद प्रासंगिक बने रहने के लिए फिर से रणनीति बनानी होगी। पहली बात तो यह है कि भाजपा और उसके सहयोगियों ने चुनाव जीतने की कला में महारत हासिल कर ली है। उन्होंने उच्च मतदान प्रतिशत को सत्ता समर्थक लहर में बदल दिया है, और इस पारंपरिक राजनीतिक तर्क को ध्वस्त कर दिया है कि बढ़ा हुआ मतदान सत्ता विरोधी होता है दूसरी बात, चुनावी नतीजों को तय करने में महिलाओं की अहम भूमिका है। देश भर में बड़ी संख्या में महिलाएं मतदान के लिए निकल रही हैं, अक्सर उनकी संख्या पुरुषों से ज्यादा होती है। महिला-केंद्रित योजनाएं चुनावों में विजयी रही हैं, खासकर उन पार्टियों के लिए जो सिर्फ वादे नहीं, बल्कि काम पूरा करती हैं। तीसरी बात है सामंजस्य, एकता और निर्बाध वोट हस्तांतरण, खासकर जब गठबंधन में चुनाव लड़ रहे हों। हालांकि राजग में नीतीश की भूमिका को लेकर शुरुआत में मतभेद थे, लेकिन जैसे ही भाजपा को जमीनी स्तर पर नीतीश कुमार के पक्ष में माहौल का एहसास हुआ, उसने तुरंत अपनी रणनीति बदल दी। उसने उन्हें मनचाही सीटें दीं और उन्हें फिर से चर्चा में ला दिया इसके विपरीत, महागठबंधन अपने आप में ही युद्धरत दिख रहा था। सहयोगी दल सीटों के बंटवारे पर सहमत नहीं हो पाए और आधा दर्जन से ज्यादा सीटों पर उन्होंने दोस्ताना मुकाबला लड़ा।

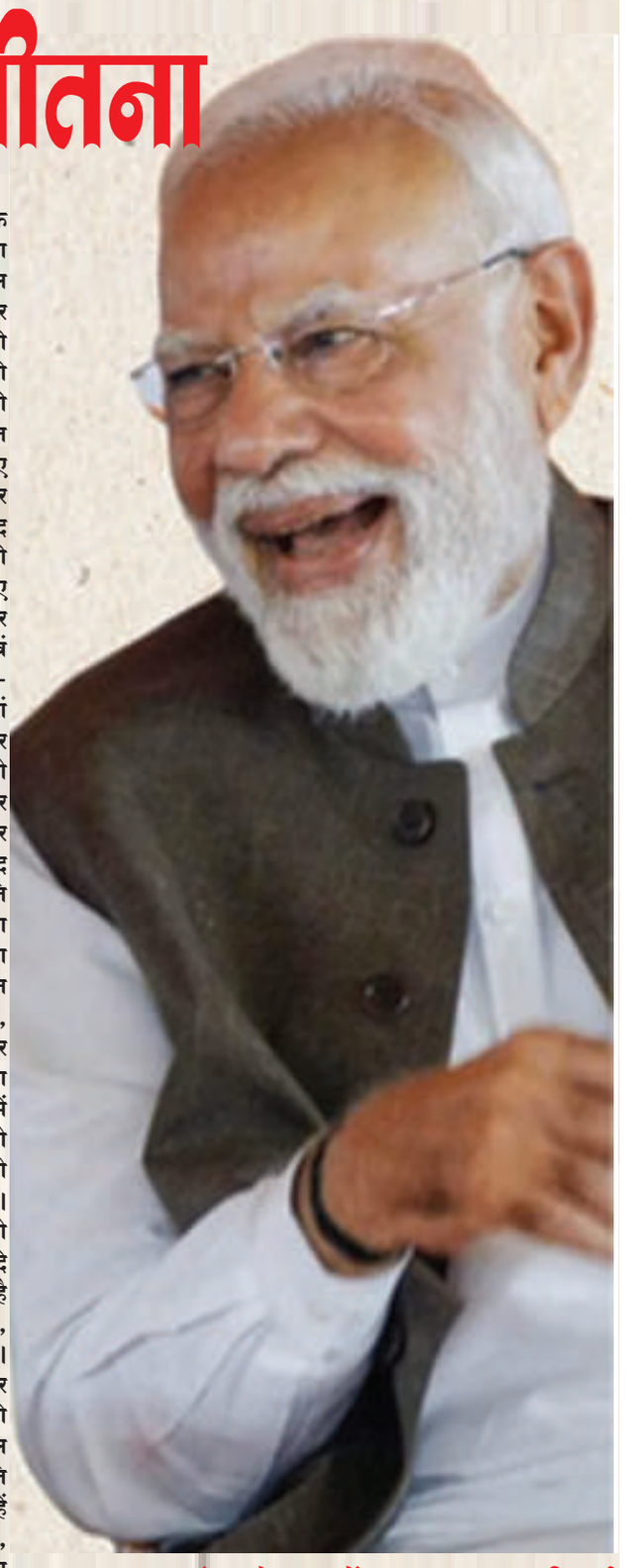

- सत्तारूढ़ गठबंधन के पक्ष में यह प्रबल लहर रिकॉर्ड 67 फीसदी मतदान के रूप में सामने आई, जो बिहार में 75 वर्षों में अब तक का सबसे अधिक मतदान था

समाज को राह दिखाता है मीडिया

16 नवम्बर राष्ट्रीय प्रेस दिवस पर विशेष

रमेश सर्राफ धमोरा

देश को आजादी दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली पत्रकारिता आजादी के बाद भी अलग-अलग परिदृश्यों में अपनी सार्थक जिम्मदारियों को निभा रही है। लेकिन मौजूदा दौर में पत्रकारिता दिनोंदिन मुश्किल बनती जा रही है। जैसे-जैसे समाज में अत्याचार, भ्रष्टाचार, दुराचार और अपराध बढ़ रहा है। पत्रकारों पर हमले की घटनाएं भी बढ़ रही हैं। मीडिया और पत्रकारों पर हमला वही करते हैं या करवाते हैं जो इन बुराइयों में डूबे हुए हैं। ऐसे लोग दोहरा चरित्र जीते हैं। मीडिया जब इनके काले कारनामों की पोल खोलने लगता है तो ये बौखला जाते हैं और उन पर हमले करवाते हैं। पुलिस और शासन तंत्र भी इन्हीं का साथ देते हैं। दिखावे के तौर पर मामले दर्ज कर लिये जाते हैं लेकिन होता कुछ नहीं। ये हालात चिन्ताजनक हैं। भारत में हर वर्ष 16 नवम्बर को राष्ट्रीय प्रेस दिवस मनाया जाता है। यह दिन भारत में एक स्वतंत्र और जिम्मेदार प्रेस की मौजूदगी का प्रतीक है। राष्ट्रीय प्रेस दिवस, प्रेस की स्वतंत्रता एंव जिम्मेदारियों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करता है। प्रथम प्रेस आयोग ने भारत में प्रेस की स्वतंत्रता की रक्षा एंव पत्रकारिता में उच्च आदर्श कायम करने के उद्देश्य से एक प्रेस परिषद की कल्पना की थी। परिणाम स्वरूप 4 जुलाई 1966 को भारत में प्रेस परिषद की स्थापना की गई जिसने 16 नवम्बर 1966 से अपना विधिवत कार्य शुरू किया। तब से लेकर आज तक प्रतिवर्ष 16 नवम्बर को राष्ट्रीय प्रेस दिवस के रूप में मनाया जाता है। राष्ट्रीय प्रेस दिवस पत्रकारों

को सशक्त बनाने के उद्देश्य से स्वयं को फिर से समर्पित करने का अवसर प्रदान करता है।

मीडिया को समाज का दर्पण एवं दीपक दोनों माना जाता है। चाहे वे समाचार पत्र हों या समाचार चैनल, उन्हें मूलतः समाज का दर्पण माना जाता है। दर्पण का काम है वह समाज की हू-ब-हू तस्वीर समाज के सामने पेश कर सकें। परन्तु कभी-कभी निहित स्वार्थों के कारण ये समाचार मीडिया समतल दर्पण की जगह उत्तल या अवतल दर्पण की तरह काम करने लग जाते हैं। इससे समाज की उल्टी, अवास्तविक, काल्पनिक एवं विकृत तस्वीर भी सामने आ जाती है। तात्पर्य यह है कि खोजी पत्रकारिता के नाम पर आज पीली व नीली पत्रकारिता हमारे कुछ पत्रकारों के गुलाबी जीवन का अभिन्न अंग बनती जा रही है। भारतीय प्रेस परिषद ने अपनी रिपोर्ट में कहा भी है कि भारत में प्रेस ने ज्यादा गलतियां की है एंव अधिकारियों की तुलना में प्रेस के खिलाफ अधिक शिकायतें दर्ज हैं।

वर्तमान समय में पत्रकारिता का क्षेत्र व्यापक हो गया है। पत्रकारिता जन-जन तक सूचनात्मक, शिक्षाप्रद एवं मनोरंजनात्मक संदेश पहुंचाने की कला एंव विधा है। समाचार पत्र एक ऐसी उत्तर पुस्तिका के समान है जिसके लाखों परीक्षक एवं अनगिनत समीक्षक होते हैं। अन्य माध्यमों के भी परीक्षक एंव समीक्षक उनके लक्षित जनसमूह ही होते हैं। तथ्यपरकता, यथार्थवादिता, संतुलन एंव वस्तुनिष्ठता इसके आधारभूत तत्व है। परन्तु इनकी कमियां आज पत्रकारिता के क्षेत्र में बहुत बड़ी त्रासदी साबित होने लगी हैं। पत्रकार चाहे प्रशिक्षित हो या गैर प्रशिक्षित, यह सबको पता है कि पत्रकारिता में तथ्यपरकता होनी चाहिए। परन्तु तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर, बढ़ा-चढ़ा कर या घटाकर सनसनी बनाने की प्रवृति आज पत्रकारिता में बढने लगी है।

रिपोर्टर्स विदआउट बॉर्डर्स (आरएसएफ) के 2025 विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक में भारत 180 देशों में से 151वें स्थान पर है। यह 2024 में 159वें और 2023 में 161वें स्थान से थोड़ा बेहतर है। लेकिन भारत अभी भी बहुत गंभीर प्रेस स्वतंत्रता श्रेणी में है। भारत नेपाल (90वां), मालदीव (104वां), श्रीलंका (139वां) और बांग्लादेश (149वां) जैसे पड़ोसी देशों से नीचे है। नॉर्वे, एस्टोनिया और नीदरलैंड प्रेस स्वतंत्रता में वैश्विक स्तर पर शीर्ष तीन प्रदर्शनकारी हैं। पहली बार, वैश्विक प्रेस स्वतंत्रता को आर्थिक दबावों के बढ़ने के कारण कठिन स्थिति में देखा जा रहा है। भारत जैसे विकासशील देशों में मीडिया पर जातिवाद और सम्प्रदायवाद जैसे संकुचित विचारों के खिलाफ संघर्ष करने और गरीबी तथा अन्य सामाजिक बुराइयों के खिलाफ लड़ाई में लोगों की सहायता करने की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। क्योंकि लोगों का एक बहुत बड़ा वर्ग पिछड़ा और अनभिज्ञ है। इसलिये यह और भी जरूरी है कि आधुनिक विचार उन तक पहुंचाए जाएं और उनका पिछड़ापन दूर किया जाए ताकि वे सजग भारत का हिस्सा बन सकें। इस दृष्टि से मीडिया की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है।

प्रधानमंत्री मोदी के बयान पर बंगाल में मचा सियासी बवाल

- टीएमसी बोली– भ्रम में मत रहें
- बीजेपी ने कहा– इशारा हो गया है

निज संवाददाता : बिहार विधानसभा चुनाव में एनडीए को प्रचंड बहुमत मिलने पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने खुलकर एलान किया कि अब भाजपा का अगला लक्ष्य पश्चिम बंगाल है। उनके इस बयान पर अब सियासी वार-पलटवार का सिलसिला शुरू हो चुका है। पीएम मोदी ने कहा था-गंगा बिहार से बंगाल तक बहती है। बिहार ने बंगाल में भाजपा की जीत का मार्ग प्रशस्त कर दिया है। अब हम बंगाल से भी जंगल राज हटाएंगे। प्रधानमंत्री के बयान पर पश्चिम बंगाल की मंत्री शशि पांजा ने निशाना साधते हुए कहा कि पीएम मोदी किसी भ्रम में मत रहें। बंगाल में भाजपा के लिए जीत दूर की कौड़ी है। शशि पांजा ने कहा-आपने बंगाल की महिलाओं का अपमान किया है। आपने बंगाल को मिलने वाली पैसों और राज्य की महिलाओं को मिलने वाले धन रोका है।

आपने और भाजपा के अन्य नेताओं ने बंगाल की महिलाओं का अनादर किया है।ममता बनर्जी सरकार की मंत्री ने कहा कि राज्य में भाजपा को बंगाल विरोधी जमींदार के तौर पर जाना जाता है। उन्होंने भाजपा को बंगाल विरोधी बताते हुए कहा कि बंगाल के आगामी विधानसभा चुनाव में उनकी जीत की कोई उम्मीद या संभावना नहीं है, क्योंकि महिलाएं उन्हें सही जवाब देंगी। वहीं, पीएम मोदी के बयान पर पश्चिम बंगाल भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष समिक भट्टाचार्य ने कहा-प्रधानमंत्री ने वही कहा, जो कहना जरूरी था। बंगाल में जो कुछ भी हो रहा है, वो अराजकता है और कानून व्यवस्था का पूरी तरह से अभाव है। पश्चिम बंगाल की जनता ने तृणमूल कांग्रेस की सरकार को त्यागने का फैसला कर लिया है। भाजपा नेता दिलीप घोष ने भी इस पर बयान देते हुए कहा-पीएम मोदी ने इशारा कर दिया है और ये जरूर होगा। अब बंगाल की बारी है। यहां बदलाव बहुत जरूरी है।

गीता केवल धर्म नहीं, जीवन का विज्ञान है : कमल सिंह

आगामी 7 दिसंबर को कोलकाता के ब्रिगेड परेड ग्राउंड में 5 लाख कण्ठों से गीता-पाठ का आयोजन होने जा रहा है। इसके मुख्य संयोजक उद्यमी, व्यवसायी एवं समर्पित समाज-सेवी कमल सिंह से गंभीर समाचार की तरफ से डा.अरविंद सेठ ने विशेष बातचीत की। पेश है बातचीत के मुख्य अंश

'जब लाखों लोग एक साथ 'गीता' का नाम भर लेते हैं, तो वातावरण दिव्यता से भर जाता है'

प्रश्नः आपने इतने विशाल गीता पाठ आयोजन में सहयोग का संकल्प कैसे लिया?

कमल सिंहः यह केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि एक दिव्य प्रेरणा है। मुझे लगा कि जब समाज एक साथ गीता का पाठ करेगा, तो सामूहिक चेतना में परिवर्तन होगा। यह विचार साधना काल में आत्मप्रेरणा के रूप में आया। यही आत्मप्रेरणा कालांतर में सनातन धर्म की सार्वभौमिक स्वीकार्यता का कारक तत्व बनेगा। इस कारण से हमने अपने सहयोग का पूर्ण समर्पण किया।

प्रश्नः इस आयोजन को आपने अपनी व्यक्तिगत साधना या तपस्या के रूप में कैसे स्वीकार किया?

कमल सिंहः मैंने इसे यज्ञ माना कर्मयज्ञ, श्रद्धायज्ञ और आत्मयज्ञ। अधिक से अधिक सनातन धर्मियों तक इस विषय का प्रचार प्रसार करना हुआ मेरा कर्म यज्ञ। भगवान श्री कृष्ण के संदेश को उन तक पहुंचाना हुआ मेरा श्रद्धा यज्ञ और समाज की उन्नति के साथ-साथ मैं स्वयं भी उन्नति की पराकाष्ठा पर पहुंच रहा हूं, यह हुआ मेरा आत्म यज्ञ।

प्रश्नः इस आयोजन से आपको आंतरिक रूप से क्या अनुभव प्राप्त हुआ?

कमल सिंहः यह अनुभव आत्मशांति और कर्तव्यनिष्ठा का संगम है। ऐसा लगता है जैसे समस्त भारत की आत्मा गीता के माध्यम से जाग्रत हो रही है।

प्रश्नः क्या किसी आध्यात्मिक संकेत या प्रेरणा से यह विचार उत्पन्न हुआ?

कमल सिंहः माता भगवती की असीम कृपा से बचपन से ही मुझे ऐसा माहौल मिला कि मैं सनातन धर्म के प्रति अपने उत्तरदायित्वों का बोध सहज ही पा जाता हूं। गुणीजन, विद्वानजन और व्यवस्थापक गण स्वयं ही मुझे कार्य भार देने और मेरी योग्यता और प्रतिबद्धता पर तनिक भी संशय नहीं करते। इनके अलावा हमारे माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र दामोदरदास मोदी जी मेरे प्रेरणास्रोत रहे हैं। सनातन धर्म के प्रति उनकी निष्ठा और कर्तव्य बोध से मैं बहुत ही अधिक प्रभावित हूं।

प्रश्नः आपने इस आयोजन को केवल कार्यक्रम नहीं बल्कि साधना के रूप में कैसे रूपांतरित किया?

कमल सिंहः श्रीमद्भागवत गीता के सामूहिक पाठ आयोजन के अध्यक्ष महोदय पद्मश्री स्वामी कार्तिक जी महाराज जो विगत् दो वर्षों से इस विशाल आयोजन की रूपरेखा के साथ-साथ इसके एक-एक कार्यक्रम की व्यक्तिगत तौर पर निगरानी का कार्य कर रहे हैं, मुख्यतः उन्होंने ही इस आयोजन को कार्यक्रम से कहीं अधिक एक साधना का रूप दे दिया है। हम तो सेवक मात्र हैं।

प्रश्न : पांच लाख श्रद्धालुओं की व्यवस्था करना किसी तप से कम नहीं। आपने इसे कैसे संभव बनाया?

कमल सिंहः यह केवल टीमवर्क नहीं, सामूहिक भक्ति का परिणाम है। प्रत्येक स्वयंसेवक ने स्वयं को सेवक माना, और अनुशासन को साधना का अंग समझा। 5 लाख कोई छोटी संख्या तो नहीं है लेकिन ईश्वर की कृपा रही तो आप यकीन मानिए यह संख्या 6 लाख से भी ऊपर जाएगी और मैं यह बात ऐसे ही स्वप्न कथा के रूप में नहीं कह रहा हूं।

बंगाल के सभी क्षेत्रों में जिला स्तर हो या उससे भी छोटे मोहल्ले स्तर पर और उससे भी छोटे स्तर पर हर नुक्कड़ पर हम जनगण को सूचित करने के लिए व आह्वाहन करने के लिए नुक्कड़ नाटकों का आयोजन कर रहे हैं। इसके अलावा ऑटो के माध्यम से लाउडस्पीकर और टेंपलेट्स आदि के द्वारा भी लोगों को इस विशाल आयोजन की जानकारी दी जा रही है और उनके आने की व्यवस्था हेतु बस से लेकर सभी प्रकार के पब्लिक ट्रांसपोर्ट की व्यवस्था पर ध्यान दिया जा रहा है ताकि भक्त गण सुविधा पूर्वक आयोजन स्थल तक पहुंच सकें और फिर प्रसन्नता पूर्वक आयोजन पूरा कर अपने घर तक वापस जा सकें।

प्रश्नः इतनी बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के अनुशासन व एकाग्रता के लिए क्या विशेष उपाय किए गए?

कमल सिंहः इतनी बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के अनुशासन के लिए मंच से लगातार दिशा निर्देश दिए जाएंगे और साथ ही स्वयं सेवकों की एक पूरी फौज अनुशासन व्यवस्था बनाए रखने के लिए अनुग्रह पूर्वक हाथ जोड़कर आग्रह करते रहेंगे। इसके लिए उन्हें पहले से ट्रेनिंग दी जा चुकी है। एकाग्रता के लिए अनावश्यक स्वर और आपसी बातचीत का निषेध रहेगा।

एक कार्यक्रम में पश्चिम बंगाल के राज्यपाल सीवी आनंद बोस को सम्मानित करते कमल सिंह।

प्रश्न : मानसिक रूप से इतने बड़े दायित्व को निभाने में आपको क्या बल मिला?

कमल सिंह : गीता का एक श्लोक मेरे लिए मार्गदर्शक बना ''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।'' यह श्लोक ही मेरे हर निर्णय में स्थिरता लाता रहा।

प्रश्नः आपके अनुसार सामूहिक गीता पाठ का आध्यात्मिक उद्देश्य क्या है?

कमल सिंहः जब लाखों लोग एक साथ ''गीता'' का नाम लेते हैं, तो वातावरण दिव्यता से भर जाता है। यह केवल पाठ नहीं एक सामूहिक साधना है।

प्रश्न : आयोजन की तैयारी के दौरान आपने कौन-कौन से व्यक्तिगत त्याग या संयम अपनाए?

कमल सिंहः आयोजन की तैयारी के दौरान मुझे किसी भी प्रकार के अतिरिक्त व्यक्तिगत त्याग व संयम की आवश्यकता ही नहीं पड़ रही क्योंकि मैं शुद्ध शाकाहारी भोजन का सेवन करता हूं और सात्विक फलाहार व दुग्धाहार पर आश्रित हूं। आयुर्वेद अनुसार समसामयिक व्रत उपवास भी समय-समय पर करता रहता हूं। सिगरेट, बीड़ी, पान-मसाला जैसे किसी भी दुर्व्यसन से मैं सदैव दूर रहता हूं और अपने जीवन अनुभव के आधार पर नई पीढ़ी को सचेत भी करना चाहूंगा कि आप ऐसे दुर्व्यसन से सदैव दूर रहें ताकि आप स्वस्थ और निरोगी रह सकें। एक स्वस्थ और निरोगी व्यक्ति ही स्वस्थ समाज और राष्ट्र का निर्माण कर सकता है।

प्रश्नः आपने टीम वॉलंटियर्स को किस प्रकार प्रशिक्षित किया कि वे 'सेवक' भाव से कार्य करें?

कमल सिंहः हमारे अध्यक्ष पद्मश्री स्वामी कार्तिक जी महाराज सभी महत कार्य ''इदन्न मम'' की समर्पण भावना से ही करते हैं। हमारे आयोजन के सचिव महोदय स्वामी निर्गुणानंद जी महाराज सभी वॉलिंटियर्स को यही प्रेरणा देते हैं कि यह कार्य धर्म और भगवान् श्री कृष्ण का है। ऐसी भावना होने से सेवा कार्य भी तप बन जाता है। जब स्वामी स्वयं भगवान श्री कृष्ण हों तो हर कोई सेवक बनने में गर्व महसूस करता है।

प्रश्नः इतनी लंबी अवधि तक लगातार कार्य करते हुए मानसिक स्थिरता बनाए रखने का आपका रहस्य क्या है?

कमल सिंह : नारायण। नारायण।। नारायण।।।

प्रश्नः क्या आपने इस कार्य को ईश्वरार्पण भाव से किया या सामाजिक दायित्व के रूप में?

कमल सिंहः दोनों ही रूपों में स्वीकार करता हूं। पहले ही कह चुका हूं कि ''इदन्न मम''। इसमें तो कोई दो राय है ही नहीं कि सब कुछ ईश्वर को अर्पण है। सामाजिक रूप से यदि दो या चार नए लोग भी इस पथ पर जुड़ जाते हैं तो मैं स्वयं को बड़ा सौभाग्यशाली मानूंगा। आज के वर्तमान समय में जब चारों ओर अराजकता का माहौल है, उस समय कृष्ण की यह कथा अपने आप प्रासंगिक हो जाती है। अतः श्रीकृष्ण का नाम लेने पर यह ईश्वर को अर्पण और उनके गीता पाठ करने पर यह समाज को अर्पण है।

प्रश्नः मानसिक रूप से इतने बड़े दायित्व को निभाने की प्रक्रिया में आपको क्या बल मिला?

कमल सिंहः गीता का एक श्लोक मेरे लिए मार्गदर्शक बना ''कर्मण्येवाधिकारस्ते मां फलेषु कदाचन।'' यह श्लोक ही मेरे हर निर्णय में स्थिरता लाता रहता है।

प्रश्नः आपके अनुसार सामूहिक गीता पाठ का आध्यात्मिक उद्देश्य क्या है?

कमल सिंहः जब लाखों लोग एक साथ ''गीता'' का नाम भर लेते हैं, तो वातावरण दिव्यता से भर जाता है। यह केवल पाठ नहीं एक सामूहिक साधना है। भारत देश में सभी रिलिजन और मजहब मानने वाले लोग अपनी-अपनी मान्यता अनुसार अपनी आस्था के आधार का प्रचार प्रसार करने में संलग्न है। परन्तु, जैसे ही बात सनातन धर्म की होती है तो लोगों को असहिष्णुता दिखती है। अब यदि श्रीराम जी और श्रीकृष्ण जी की जन्म भूमि पर इनका नाम और इनका स्मरण न होगा तो कहां होगा? यह तो हुई आध्यात्मिक चेतना की बात। लाक्षित रूप से मुख्य लक्ष्य धर्म के आधार पर सत्य और सनातन की पुनर्स्थापना का है। धर्म और सत्य जहां है, वहीं सनातन सभ्यता के ''वसुदधैव कुटुंबकम'' की विचारधारा का पोषण हो सकता है।

प्रश्नः युवाओं के लिए आपका संदेश क्या है?

कमल सिंहः गीता केवल धर्म नहीं, जीवन का विज्ञान है। जो गीता को समझता है, वह अपने कर्म को पूजा बना देता है।

सुंदरबन में देखने को मिली प्यार की अनोखी दास्तां

सामाजिक बंधनों को परे रखकर दो लड़कियों ने आपस में लिए फेरे

निज संवाददाता : कहते हैं सच्चा प्यार किसी भी तरह के सामाजिक बंधनों को नहीं मानता। इसकी मिसाल बंगाल के सुंदरबन में देखने को मिली है। यहां की दो महिलाओं के बीच प्रेम की एक अनोखी दास्तां सामने आई है। सुंदरबन के एक दूरदराज इलाके में दो महिलाओं रिया सरदार और राखी नस्कर के बीच प्यार ने सामाजिक बंधनों को तोड़ दिया। दोनों ने एक-दूसरे से शादी कर ली और सच्चे प्यार में विश्वास रखने वालों के लिए एक मिसाल कायम की। यह शादी हाल ही में एक स्थानीय मंदिर में हुई। जहां दोनों ने मालाएं बदलीं और एक नए जीवन की शुरुआत की।रिया सरदार मंदिरबाजार और राखी नस्कर बकुलतला की रहने वाली हैं। रिया और राखी दोनों ही पेशेवर डांसर हैं। रिया ने कम उम्र में ही अपने माता-पिता को खो दिया था और उनका पालन-पोषण उनके चाचा-चाची ने किया। इस बीच राखी अपने परिवार के साथ पली-बढ़ी। रिया और राखी की मुलाकात लगभग दो साल पहले हुई थी और फोन पर हुई दोस्ती धीरे-धीरे प्यार में बदल गई।जब रिया ने अपने परिवार को राखी के साथ अपने रिश्ते के बारे में बताया, तो उन्होंने इसे स्वीकार करने से इनकार कर दिया। कोई विकल्प न होने पर रिया अपना घर छोड़कर राखी के साथ रहने लगी। राखी का परिवार उनके साथ मजबूती से खड़ा था। पड़ोसियों से बातचीत के बाद एक स्थानीय मंदिर में शादी का आयोजन किया गया। दोनों युवतियों ने एक-दूसरे को माला पहनाई और साथ मिलकर जीवन का एक नया अध्याय शुरू किया। शादी के बाद रिया ने मीडिया को बताया कि मैंने अपने परिवार को अपने रिश्ते के बारे में बताया, लेकिन किसी ने इसे स्वीकार नहीं किया। मैंने तय किया कि मैं उस व्यक्ति को नहीं खोऊंगी, जिससे मैं प्यार करती हूं। इसलिए मैं घर छोड़कर राखी के साथ रहने लगी। हमने अपनी इच्छाओं का सम्मान किया है। प्यार ही असली मायने रखता है। किसने तय किया कि सिर्फ एक महिला ही पुरुष से प्यार कर सकती है, या एक पुरुष ही महिला से प्यार कर सकता है? इस बीच राखी ने कहा कि हम दो साल से साथ हैं। हमने डेटिंग शुरू की, लेकिन कई लोगों ने कहा कि दो लड़कियां एक रिश्ते में कैसे रह सकती हैं? लेकिन हमने तय किया कि हम जिंदगी भर साथ रहेंगे। मेरे परिवार ने इसे स्वीकार कर लिया। हालांकि रिया के परिवार ने नहीं। उसके पिता ने कहा कि वह घर पर नहीं रह सकती। हम और क्या कर सकते थे? वह मेरे और मेरे परिवार के साथ रहने आ गई। पिछले साल सितंबर में भी ऐसी ही एक घटना घटी थी। पश्चिम बंगाल के

दुबराजपुर में सोशल मीडिया पर दो महिलाओं की कहानी चर्चा में थी। उनकी दोस्ती शादी में बदल गई। नमिता दास, खैराशोल की सुष्मिता चटर्जी से मिलने के लिए मालदा से इतनी दूर चली आईं। एक हफ़्ते पहले इस जोड़े ने दुबराजपुर के एक शिव मंदिर में सिंदूर का आदान-प्रदान करके अपने वैवाहिक जीवन की शुरुआत की।

राज्य के स्कूलों में रवींद्रनाथ टैगोर का लिखा 'बांग्लार माटी' अनिवार्य

स्कूलों में सुबह की प्रार्थना सभा में कक्षा एक से दस तक प्रतिदिन छात्रों को गाना होगा गीत

निज संवाददाता : राज्य माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने सभी सहायता प्राप्त और प्रायोजित स्कूलों को कक्षा 4 से 10 तक की सुबह की प्रार्थना सभा में राज्य गीत, ''बांग्लार माटी बांग्लार जल'' अनिवार्य रूप से शामिल करने का निर्देश दिया। राज्य माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने सभी उच्च प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों को इसकी अधिसूचना जारी कर दी है। अधिसूचना में कहा गया है कि सुबह की प्रार्थना सभा में राज्य गीत को नियमित रूप से अनिवार्य रूप से गाया जाए। राज्य के शिक्षा मंत्री ब्रात्य बसु ने कहा- रवींद्रनाथ टैगोर का 1905 में लिखा गया यह प्रसिद्ध गीत अब बंगाल के प्रत्येक सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूल में प्रत्येक दिन की शुरुआत में प्रार्थना गीत (प्रार्थना संगीत) के रूप में गाया जाएगा। बसु ने कहा कि राज्य गीत के साथ कवि द्वारा रचित राष्ट्रगान (जन गण मन) का नियमित गायन सामाजिक और सांप्रदायिक एकता के लिए उत्प्रेरक होगा। रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा बंगाल के लिए रचित गीत बांग्लार माटी की रचना 1905 में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासक के बंगाल के विभाजन के निर्णय के विरुद्ध आंदोलन के समर्थन में की गई थी। गौरतलब है कि मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने सितंबर 2023 में बंगाल के राज्य गीत के लिए एक उपयुक्त गीत चुनने हेतु एक नागरिक सम्मेलन आयोजित किया था। उस सम्मेलन में राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि, धार्मिक नेता और प्रमुख नागरिक शामिल हुए थे। सभी ने बांग्लार माटी का भारी समर्थन किया था। उसी वर्ष एक विधानसभा सत्र में एक प्रस्ताव पारित कर इसे राज्य गीत बनाया गया। इसके बाद राज्य ने एक आदेश जारी कर इसे राष्ट्रगान के साथ सभी राजकीय समारोहों में

अनिवार्य कर दिया।मालूम हो कि राज्य आदेश बंगाल में मतदाता सूची के चल रहे विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) को लेकर तृणमूल और भाजपा के बीच चल रहे राजनीतिक घमासान की पृष्ठभूमि में आया है। तृणमूल के वरिष्ठ नेताओं ने हाल ही में टैगोर के एक अन्य गीत, आमार सोनार बांग्ला (जो बांग्लादेश का राष्ट्रगान भी है) गाने के लिए असम कांग्रेस के एक नेता की गिरफ्तारी की भी निंदा की है।निर्देश पर स्कूल प्रमुखों ने अलग-अलग प्रतिक्रिया व्यक्त की। जोधपुर पार्क बॉयज़ स्कूल के प्रधानाध्यापक अमित सेन मजूमदार ने ज़ोर देकर कहा कि उनका स्कूल इस साल जनवरी से ही रोज़ाना (राष्ट्रगान के साथ) राज्य गीत गा रहा है। उन्होंने कहा कि नोटिस जारी होने से पहले ही हमने अपनी सुबह की सभा में राज्य गीत प्रस्तुत कर दिया था। यह गर्व की बात है कि राज्य प्रशासन ने एक आदेश जारी किया है जिसका हमने पहले ही पालन कर दिया है।हिंदू स्कूल के प्रधानाध्यापक सुभ्रजीत दत्ता ने कहा कि उनका स्कूल माध्यमिक परीक्षा के बाद नियमित कक्षाएं शुरू होते ही राज्य के आदेश को लागू कर देगा। हालांकि, कुछ शिक्षकों ने हर सुबह दो गीत गाने के औचित्य पर सवाल उठाया। शहर के एक स्कूल के प्रधानाध्यापक ने भी इस बात पर आश्चर्य जताया कि क्या सभी छात्र राज्य गीत के बोल याद रख पाएंगे।

विधानसभा के शीतकालीन सत्र में तृणमूल लाएगी एसआईआर के खिलाफ प्रस्ताव

भाजपा व चुनाव आयोग पर हमले की तैयारी

निज संवाददाता : मतदाता सूची के विशेष व्यापक पुनरीक्षण या एसआईआर को लेकर राज्य में राजनीतिक पारा धीरे-धीरे चढ़ रहा है। तृणमूल कांग्रेस चुनाव आयोग की इस प्रक्रिया को लेकर पहले ही सड़क पर उतर चुकी है। अब वह इस मुद्दे पर विधानसभा में सीधा हमला बोलने की तैयारी में है। खबर है कि तृणमूल संसदीय दल ने विधानसभा के आगामी शीतकालीन सत्र में एसआईआर के खिलाफ औपचारिक प्रस्ताव लाने पर गंभीरता से विचार करना शुरू कर दिया है। राज्य में अगले साल विधानसभा चुनाव होने हैं। उससे पहले, इस साल का शीतकालीन सत्र मौजूदा विधानसभा का आखिरी पूर्ण सत्र होने वाला है। क्योंकि, फरवरी में चुनाव से पहले अंतरिम बजट सत्र होगा। ऐसे में इस सत्र का राजनीतिक महत्व काफी बढ़ गया है। तृणमूल का मानना है कि यह सत्र राज्य की जनता को संदेश देने का एक बड़ा मंच होगा, जिससे एसआईआर के खिलाफ रुख सीधे तौर पर सामने आ सकेगा और भाजपा व चुनाव आयोग की भूमिका की आलोचना की जा सकेगी। तृणमूल ने आरोप लगाया कि चुनाव आयोग ने केंद्र में

सत्तारूढ़ पार्टी भाजपा के इशारे पर राज्य में यह विशेष गहन संशोधन प्रक्रिया शुरू की है। इससे आम मतदाताओं के नाम सूची से बाहर होने और नागरिकता खोने के डर से पूरे राज्य में दहशत का माहौल है। अधिक गंभीर आरोप यह है कि इस डर के कारण राज्य के विभिन्न हिस्सों में लोग आत्महत्या कर रहे हैं। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने खुद हाल ही में कहा था कि बंगाल के लोगों को एसआईआर के नाम पर डराया जा रहा है, लेकिन उनके पास दीदी है तो वे नहीं डरेंगे। मंगलवार को मुख्यमंत्री ममता बनर्जी और तृणमूल के अखिल भारतीय महासचिव अभिषेक बनर्जी ने कोलकाता के रेड रोड से जोड़ासांको तक एक विरोध मार्च में भाग लिया। पार्टी का स्पष्ट संदेश है कि यह आंदोलन न केवल सड़कों तक पहुंचेगा, बल्कि इस बार विधानसभा तक भी पहुंचेगा। पार्टी के एक वरिष्ठ परिषद सदस्य ने कहा कि चुनाव आयोग की यह एसआईआर प्रक्रिया लोगों को दहशत में डाल रही है विधानसभा दल इस बार विधानसभा में औपचारिक रूप से एक प्रस्ताव भी लाना चाहता है ताकि आयोग और भाजपा के खिलाफ अपना रुख स्पष्ट किया जा सके। हालांकि, तृणमूल ने अभी तक प्रस्ताव के मसौदे के बारे में सार्वजनिक रूप से कुछ नहीं कहा है। पार्टी के अंदर चर्चा है कि शीर्ष नेतृत्व से हरी झंडी मिलते ही शीतकालीन सत्र में इस प्रस्ताव को औपचारिक रूप से पेश किया जाएगा।

दिलीप घोष ने शरणार्थी हिंदुओं को सीएए के ज़रिए नागरिकता का आश्वासन दिया

निज संवाददाता : भाजपा नेता दिलीप घोष ने झाड़ग्राम के वार्ड संख्या 18 में एसआईआर के गणना शिविर में शिरकत की और शरणार्थी हिंदुओं को सीएए के ज़रिए सीधे नागरिकता दिलाने का आश्वासन दिया। शिविर में आए कुछ निवासियों ने उन्हें बताया कि वे 2002 के बाद बांग्लादेश से भारत आए थे। हालांकि उनके नाम मतदाता सूची में शामिल थे, लेकिन 2002 की सूची में उनका नाम नहीं था, इसलिए वे गणना फ़ॉर्म कैसे भरें, इस बारे में संशय में थे। इसके बाद दिलीप ने यह आश्वासन दिया। दिलीप घोष ने उन्हें बताया कि कुछ ही दिनों में यहां एक सीएए शिविर खोला जाएगा। जो शरणार्थी हैं, उन्हें आवेदन करते ही नागरिकता दे दी जाएगी। उनके इस आश्वासन से स्थानीय निवासियों को राहत मिली। मालूम हो कि 1955 में बांग्लादेश (तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान) के विभिन्न हिस्सों से लगभग 72 परिवार इस क्षेत्र में आए थे। इस बीच, भाजपा समर्थित हिंदुत्व संगठन हिंदू ओइक्या मंदिर पर शरणार्थियों को नागरिकता प्रमाण पत्र प्रदान करने के नाम पर धन शोधन के आरोप लगे हैं। कथित तौर पर, बसंती के विभिन्न इलाकों में सीएए-केंद्रित शिविरों में फॉर्म भरने के लिए किसी से 1,000 रुपये और किसी से 1,200 रुपये लिए जा रहे हैं। नियमों के अनुसार, नागरिकता के लिए आवेदन करने की कोई लागत नहीं है। जैसे ही यह आरोप सामने आया, पूरे सुंदरबन में भारी हंगामा मच गया। राजनीतिक दबाव भी चरम पर है। तृणमूल का दावा है कि भाजपा लोगों को डरा-धमका कर शिविरों में ले जा रही है और मौके पर भारी रकम ले रही है। उनका आरोप है कि पहले से प्रचार किया गया है ताकि शरणार्थी डर के मारे शिविरों में आ जाएं, और वहां दस्तावेज़ सत्यापन के नाम पर पैसे लिए जा रहे हैं। स्थानीय तृणमूल विधायक श्यामल मंडल ने आरोप लगाया कि यह पूरी तरह से अवैध है, भाजपा लोगों की मजबूरी का फायदा उठा रही है। उन्होंने कहा कि वह इस मामले को उच्च प्रशासन के समक्ष उठाएंगे और तत्काल कार्रवाई की मांग करेंगे। पालबारी शिविर के प्रभारी विकर्ण नस्कर ने बताया कि शिविर चलाने के लिए केवल एक छोटी राशि ली गई है, जिससे काम करने वालों का खर्च चल सके।

100 दिन का काम समय से पहले शुरू होने को लेकर पैदा हुईं नई जटिलताएं

केंद्र ने बंगाल से मांगी एक और रिपोर्ट

निज संवाददाता : कलकत्ता हाईकोर्ट ने स्पष्ट आदेश दिया था कि बंगाल के जॉब कार्ड धारकों के लिए तुरंत कार्य दिवस स्वीकृत किए जाएं और परियोजना में काम भी कराया जाए। फैसला आ जाने के एक सप्ताह बीत जाने के बाद भी, केंद्र सरकार की ओर से कोई हलचल नहीं दिख रही है। सर्वोच्च न्यायालय में अपना पक्ष रखने में असमर्थ रहने के बाद, केंद्र ने 100 दिन के काम को रोकने के लिए एक नई रणनीति अपनाई है। ग्रामीण विकास मंत्रालय ने सूचित किया है कि राज्य को एक नई कार्रवाई रिपोर्ट प्रस्तुत करनी होगी। समय सीमा एक महीने की है। तर्क यह है कि केंद्र राज्य द्वारा अब तक उठाए गए कदमों को असंतोषजनक मानता है।

बीते 11 नवंबर को भेजे गए केंद्रीय पत्र में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि राज्य की नवीनतम एटीआर, जो 11 जुलाई, 2025 को भेजी गई थी, में अनियमितताओं को रोकने या पारदर्शिता बनाए रखने के लिए पर्याप्त सबूत नहीं थे। ग्रामीण विकास मंत्रालय का मानना है कि कुल 19 जिलों में वित्तीय अनुशासन सुनिश्चित करने के लिए राज्य के कदम अपर्याप्त हैं। इस सवाल पर फिर से अनिश्चितता पैदा हो गई है कि अदालत के वास्तविक आदेश के बावजूद केंद्र धारा 27 को हटाने और मनरेगा परियोजना शुरू करने को तैयार क्यों नहीं है। इस बात को लेकर भी संशय बढ़ रहा है कि परियोजना जल्द शुरू होगी या नहीं। गुरुवार को संसद की लोक लेखा समिति की बैठक में भी 100 दिन का काम चर्चा का मुख्य विषय रहा। विशेष सूत्रों के अनुसार, जब कांग्रेस के राज्यसभा सांसद शक्तिसिंह गोहिल ने सीधे तौर पर बंगाल की स्थिति पर सवाल उठाया, तो ग्रामीण विकास मंत्रालय के सचिव शैलेश कुमार सिंह ने कहा कि उच्च न्यायालय के आदेश के अनुसार काम शुरू करने की तैयारी चल रही है। हालांकि, उन्होंने यह नहीं बताया कि परियोजना कब फिर से शुरू होगी। नवान्न का दावा है कि केंद्र बार-बार दस्तावेज मांग रहा है और राजनीतिक उद्देश्यों के लिए धन रोक रहा है। राज्य के पंचायत मंत्री प्रदीप मजूमदार ने कहा कि केंद्र के आरोप निराधार हैं। उन्होंने बताया कि अनियमितताओं के आरोप में कई अधिकारियों के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई की गई है, 25 से ज़्यादा एटीआर जमा किए गए हैं और लगभग 6 करोड़ रुपये वसूल कर वापस किए गए हैं। ये सब ई-ट्रांसफर के ज़रिए किया गया है। उन्होंने कहा कि राज्य पर लगे आरोपों का जवाब देने में कोई दिक्कत नहीं होगी। हालांकि, राज्य सरकार केंद्र के नए पत्र का जवाब देने से पहले कानूनी सलाह लेने पर भी विचार कर रही है।

मुक्तांचल पत्रिका व गाथा प्रकाशन की गोष्ठी

निज संवाददाता : मुक्तांचल पत्रिका व गाथा प्रकाशन के संयुक्त तत्वावधान में बीते नौ नवंबर को पत्रिका की संपादक मीरा सिन्हा ने एक गोष्ठी का आयोजन किया। यह आयोजन आरा से कोलकाता प्रवास पर आए वरिष्ठ कवि, अनुवादक एवं संवेदनशील रचनाकार जगदीश नलिन के सम्मान में समर्पित था। कोलकाता पधारे साहित्यकारों के साथ ऐसे साहित्यिक संवादों का आयोजन डॉ. मीरा सिन्हा निरंतर करती रही हैं। हालांकि, स्वास्थ्य प्रतिकूल होने के कारण नलिन जी स्वयं उपस्थित नहीं हो सके, फिर भी कवि शैलेंद्र शांत द्वारा उनकी सद्य लिखित कविता 'जिजीविषा नहीं मरेगी' सहित अनेक रचनाओं का ओजस्वी पाठ ऐसा था कि लगा मानो नलिन जी स्वयं अड्डे में विराजमान हों। गोष्ठी में शैलेंद्र शांत के नवीनतम काव्य-संग्रह 'चकाचौंध का अंधेरा' (दूसरा संस्करण) से कुछ कविताओं का पाठ कवि एवं प्रो. शुभ्रा उपाध्याय ने किया।कार्यक्रम की एक विशेष स्मरणीय घटना यह रही कि वरिष्ठ रंगकर्मी व कवि महेश जायसवाल ने 20 वर्ष पूर्व (2005) शैलेंद्र शांत के दूसरे काव्य-संग्रह 'मैं हूं तुम्हारी कविता' पर लिखे गए अपने पत्र को पुनः प्रस्तुत किया। इस ऐतिहासिक पत्र की सह-प्रस्तुतकर्ता उस समय कवयित्री मंजु श्रीवास्तव थीं। उस पुराने आयोजन में ध्रुवदेव मिश्र 'पाषाण', चंद्रकला पांडेय और विमलेश्वर जैसे रचनाकारों की प्रेरक उपस्थिति रही थी। जायसवाल ने बताया कि उन्होंने उस पत्र को दो दशकों तक सहेजकर रखा और जैसे ही नलिन जी के सम्मान में आयोजित इस गोष्ठी में शैलेंद्र जी के आने की सूचना मिली, उन्होंने अपनी नई कविता के स्थान पर उसी पत्र का पुनर्पाठ करने का निर्णय लिया।

शैलेंद्र शांत ने इसे अपना हासिल बताया और कहा कि ''यह स्मृतियों के संरक्षण का अनोखा उदाहरण है।''गोष्ठी में कथाकार-ग़ज़लकार सेराज़ ख़ान 'बातिस', राज्यवर्धन, डॉ. शुभ्रा उपाध्याय, डॉ. विजया सिंह, सुशील पांडेय ने अपनी-अपनी कविताओं का पाठ किया। गोष्ठी का संचालन संस्था के सह-सचिव विनोद यादव ने किया व पद्माकर व्यास ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

हल करो हीरो बनो का उत्तर

1.क्रीसलैंड, 2.संजय मल्होत्रा, 3.मेसोपोटामिया, 4.लुईस कैरोल, 5.चंद्रमा, 6.17 मई को

डायबिटीज के इलाज में बंगाल को मिली अंतरराष्ट्रीय पहचान

सीएम ममता ने सफलता के लिए प्रोजेक्ट से जुड़े सभी लोगों को दी बधाई

निज संवाददाता : डायबिटीज या मधुमेह के खिलाफ लड़ाई में अब बंगाल दुनिया को रास्ता दिखा रहा है। हाल ही में, हार्वर्ड मेडिकल स्कूल के प्रोफेसर जीन बुकमैन, जो नॉन-कम्युनिकेबल डिजीज के सबसे जाने-माने डॉक्टरों में से एक हैं, एसएसकेएम आए थे। उन्होंने टाइप-1 डायबिटीज के खिलाफ लड़ाई में बंगाल की पहल की जमकर तारीफ की। सोशल मीडिया पर बंगाल की सफलता को रेखांकित करते हुए मुख्यमंत्री ने लिखा-मुझे यह घोषणा करते हुए बहुत खुशी हो रही है कि बांग्ला मॉडल टाइप-1 डायबिटीज से लड़ने के लिए एक ग्लोबल मॉडल बन गया है। साथ ही, मुख्यमंत्री ने कहा कि यह देश में पहला राज्य सरकार द्वारा चलाया जाने वाला कार्यक्रम है, जिसकी अब पूरी दुनिया तारीफ कर रही है। कुछ महीने पहले, इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर पीडियाट्रिक एंड एडोलसेंट डायबिटीज या आईएसपीएडी ने बच्चों और किशोरों में टाइप-1 डायबिटीज के इलाज में स्टेट-ऑफ-द-आर्ट हेल्थ सिस्टम डेवलप करने के लिए 2025 के लिए राज्य सरकार को चुना था। इस बार डायबिटीज के खिलाफ लड़ाई में पूरी दुनिया उसी मॉडल पर भरोसा कर रही है। इस दिन मुख्यमंत्री ने सोशल मीडिया पर लिखा-हाल ही में हार्वर्ड मेडिकल स्कूल के प्रोफेसर जीन बुकमैन एसएसकेएम आए थे। सभी नॉन-कम्युनिकेबल बीमारियों के एक्सपर्ट होने के नाते, दुनिया के सबसे अच्छे डॉक्टरों में से एक, इस डॉक्टर ने टाइप-1 डायबिटीज के खिलाफ लड़ाई में बंगाल की पहल की बहुत तारीफ की। मुख्यमंत्री ने इस सफलता के लिए प्रोजेक्ट से जुड़े सभी लोगों को बधाई भी दी। विशेषज्ञों का कहना है कि डायबिटीज आम तौर पर दो तरह की होती है, टाइप-1 और टाइप-2। टाइप-1 डायबिटीज मुख्य रूप से जेनेटिक समस्याओं के कारण होती है और नाबालिगों में ज़्यादा आम है। इसे ऑटोइम्यून बीमारी कहा जाता है। जब पैंक्रियास में इंसुलिन बनाने वाले सेल्स खराब हो जाते हैं, तो शरीर इंसुलिन बनाना बंद कर देता है। इस स्थिति को मेडिकल भाषा में डायबिटीज कहा जाता है। हालांकि, दोनों तरह की डायबिटीज में लक्षण लगभग एक जैसे ही होते हैं। डॉक्टरों का मानना है कि लोगों की अनियमित जीवनशैली और अस्वास्थ्यकर खाने की आदतों के कारण इस बीमारी के मामले बहुत बढ़ गए हैं। ऐसे में बच्चों में भी यह बीमारी बढ़ी है। इससे लड़ने के लिए स्वास्थ्य और परिवार कल्याण विभाग ने पब्लिक हेल्थ प्रोग्राम शुरू किए हैं। हर ज़िले में 'डेडिकेटेड' क्लीनिक बनाए गए हैं, जहां खास दिनों में यह इलाज और कंसल्टेशन सर्विस मिलती है। हालांकि भारत में टाइप-1 डायबिटीज़ से पीड़ित बच्चों की संख्या सबसे ज़्यादा है, लेकिन इस बीमारी से निपटने के लिए इतना अच्छा और पक्का सरकारी मेडिकल सिस्टम इसी राज्य के अलावा कहीं और नहीं बना है। इस राज्य ने पूरे देश को रास्ता दिखाया है।

जुवेनाइल डायबिटीज़ के इलाज का काम सबसे पहले बंगाल में शुरू हुआ था। शुरुआत में, हेल्थ डिपार्टमेंट ने यह काम चार ज़िलों में शुरू किया था। बाद में, इसे 11 और ज़िलों में फैला दिया गया। नेशनल हेल्थ मिशन प्रोजेक्ट में जुवेनाइल टाइप-1 डायबिटीज़ के लिए कोई इंतज़ाम नहीं था। राज्य सरकार ने अपने आप काम शुरू कर दिया। पूरी दुनिया अब उस पहले और कभी नहीं उठाए गए कदम को पहचान रही है।

बाल चिकित्सा सर्जरी में बंगाल देश में सर्वश्रेष्ठ

निज संवाददाता : बंगाल के बाल शल्य चिकित्सक देश के सर्वश्रेष्ठ चिकित्सकों में से हैं। इंडियन एसोसिएशन ऑफ पीडियाट्रिक सर्जन्स के अनुसार, पश्चिम बंगाल का बाल शल्य चिकित्सा संघ देश के सभी राज्यों में सर्वश्रेष्ठ है। इंडियन एसोसिएशन ऑफ पीडियाट्रिक सर्जन्स के बंगाल चैप्टर को 2024-25 की अवधि के दौरान उनकी गतिविधियों के लिए सर्वश्रेष्ठ का ताज पहनाया गया है। पीडियाट्रिक सर्जरी एसोसिएशन ऑफ वेस्ट बंगाल को उस अवधि के लिए सर्वश्रेष्ठ घोषित किया गया है। उस समय संगठन के अध्यक्ष डॉ. रुचिरेंदु सरकार थे और सचिव डॉ. सुजॉय पाल थे। वर्तमान में, एसएसकेएम अस्पताल में बाल चिकित्सा सर्जरी विभाग के प्रमुख डॉ. रुचिरेंदु सरकार हैं। बाल चिकित्सा सर्जरी विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. सुजॉय पाल हैं। वे देश में बंगाल की जीत से खुश हैं। देश के हर राज्य में बाल शल्य चिकित्सकों की एक अलग शाखा है। इनमें से बंगाल के बाल शल्य चिकित्सा विभाग के डॉक्टरों के संगठन पश्चिम बंगाल बाल शल्य चिकित्सा संघ को चुनने के पीछे कई कारण हैं।

आईसीएमआर की रिपोर्ट में हुआ खुलासा

9 में से 1 भारतीय है किसी न किसी बीमारी से ग्रस्तलोगों ने लिया लाभ

भारत में सबसे ज्यादा रिपोर्ट किए गए संक्रमणों में इनफ्लुएंजा ए, डेंगू, हेपेटाइटिस ए, नोरोवायरस और हर्पीज सिंप्लेक्स वायरस शामिल है

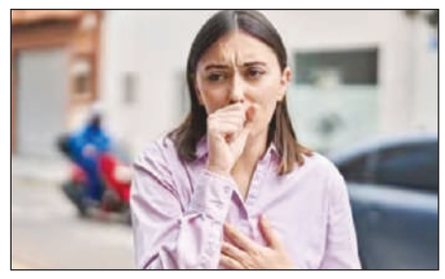

निज संवाददाता : भारत में संक्रमण एक गंभीर खतरा बनता जा रहा है। आए दिन इसका दायरा लगातार बढ़ता जा रहा है। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) की एक रिपोर्ट ने चौंकाने वाले आंकड़े जारी किए हैं। रिपोर्ट के अनुसार, देश में हर 9 में से एक व्यक्ति किसी ने किसी संक्रामक बीमारी की चपेट में है। आईसीएमआर ने यह जानकारी अपनी वायरस रिसर्च एंड डायग्नोस्टिक लैब नेटवर्क के डेटा के आधार पर दिए हैं। आईसीएमआर की रिपोर्ट के अनुसार, जनवरी से मार्च 2025 के बीच लिए 2,28,856 सैंपलों में से 24,502 यानी 10.7 फीसद में संक्रमण पाया गया है। वहीं अप्रैल से जून 2025 के बीच 2,26,095 सैंपलों में से 26,055 यानी 11.5 फीसद संक्रमित पाए गए हैं। इसका मतलब है कि संक्रमण दर में 0.8 फीसद की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। रिपोर्ट के अनुसार, देश में संक्रामक बीमारियां लगातार बढ़ती जा रही हैं और अगर समय रहते प्रभावी कदम नहीं उठाए गए तो आने वाले समय में एक बड़े स्वास्थ्य संकट का कारण भी बन सकता है। आईसीएमआर की रिपोर्ट में सामने आया है कि भारत में सबसे ज्यादा रिपोर्ट किए गए संक्रमणों में इनफ्लुएंजा ए, डेंगू , हेपेटाइटिस ए, नोरोवायरस और हर्पीज सिंप्लेक्स वायरस शामिल है। इन बीमारियों के कारण लोगों में सांस लेने से संबंधित संक्रमण, पीलिया, दस्त और दिमाग से जुड़ी बीमारियों का खतरा बढ़ रहा है। आईएमसीआर की रिपोर्ट को लेकर एक्सपर्ट्स का कहना है कि भले ही संक्रमण दर में बढ़ोतरी मामूली दिख रही हो, लेकिन इसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। यह मौसमी बीमारियों और नए संक्रमणों के लिए एक अर्ली वॉर्निंग के रूप में काम कर सकती है। एक्सपर्ट्स बताते हैं कि अगर संक्रमण के तिमाही आंकड़ों की निगरानी जारी रखी गई तो भविष्य में महामारी जैसी कंडीशन को रोका जा सकता है। आईसीएमआर के अनुसार साल 2014 से 2024 के बीच देश भर में 40 लाख से ज्यादा सैंपलों की जांच की गई है। जिनमें 18.8 फीसद सैंपलों में संक्रमण दर पैदा करने वाले रोगाणुओं की पहचान हुई है। वहीं एक्सपर्ट्स का मानना है कि संक्रमण दर बढ़ने की प्रमुख वजहों में तेजी से बढ़ता शहरीकरण, भीड़भाड़, स्वच्छता की कमी और जलवायु परिवर्तन शामिल है, जो वायरस और बैक्टीरिया को फैलाने के लिए सही माहौल देते हैं। वहीं रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि भारत में संक्रामक रोगों के मामलों की लगातार निगरानी की जा रही है। इसके अलावा एक्सपर्ट्स ने चेतावनी दी है कि संक्रमण दर का यह बढ़ता ट्रेंड फ्यूचर में देश की स्वास्थ्य व्यवस्था पर बोझ डाल सकता है।

केंद्र सरकार के मूल्यांकन में बंगाल की जल संरक्षण परियोजना अव्वल-मुख्यमंत्री ने जताई खुशी

निज संवाददाता : पश्चिम बंगाल राज्य सरकार की एक और परियोजना को केंद्र सरकार ने सर्वश्रेष्ठ घोषित किया है। राज्य सरकार के नवदिगंत टाउनशिप प्राधिकरण (एनडीआईटीए) ने जल संरक्षण और बाद में इसे सेवाओं के रूप में निवासियों तक पहुंचाने का कार्य शुरू किया है। इस कार्य ने अब केंद्र सरकार के जल शक्ति मंत्रालय के मूल्यांकन में शीर्ष स्थान प्राप्त कर लिया है। राज्य को 2024 के लिए छठा राष्ट्रीय जल पुरस्कार प्राप्त हो रहा है। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने एक्स हैंडल पर एक संदेश दिया। उन्होंने इस गतिविधि में शामिल सभी लोगों को हार्दिक बधाई दी है।मालूम हो कि मुख्यमंत्री की प्रेरणा से राज्य में कई परियोजनाएं चलाई जा रही हैं। बंगाल की कन्याश्री परियोजना विश्व प्रसिद्ध है। छात्राओं की शिक्षा के लिए राज्य सरकार की एक परियोजना है। उस परियोजना के माध्यम से, बंगाल की लड़कियां शिक्षा की दुनिया में और आगे आई हैं। मुख्यमंत्री ने जल संसाधनों को बनाए रखने और मानव उपयोग के लिए इसका उपयोग करने के बारे में भी सोचना शुरू किया। मुख्यमंत्री ने वर्षा जल को संग्रहित कर उसका उपयोग करने का संदेश दिया। जल धरो, जल भरो परियोजना के तहत राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में तालाब, जलाशय खोदे गए हैं। कृषि के साथ-साथ मछली पालन भी किया जा रहा है। राज्य सरकार सीमांत क्षेत्रों के विकास के लिए और कदम उठा रही है।केंद्र सरकार के जल शक्ति मंत्रालय ने घोषणा की है कि राज्य सरकार के नवदिगंत टाउनशिप प्राधिकरण (एनडीआईटीए) को सर्वश्रेष्ठ का खिताब दिया जाएगा। 2024 की सूची की घोषणा कर दी गई है। इसमें बंगाल पहले स्थान पर है। खबर है कि यह पुरस्कार 18 नवंबर को दिया जाएगा। मुख्यमंत्री ने एक एक्स हैंडल संदेश में इस खुशखबरी की घोषणा की। मुख्यमंत्री ने लिखा-यह मान्यता एकीकृत जल आपूर्ति और शहरी लचीलेपन के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का प्रमाण है। इसे संभव बनाने वाले सभी लोगों और सभी सहयोगियों को हार्दिक बधाई।

बंगाल के यात्री साथी स्कीम को मिला उत्कृष्टता पुरस्कार

निज संवाददाता : बंगाल की उत्कृष्टता के ताज में एक और नया कीर्तिमान जुड़ गया है। बंगाल के यात्री साथी कार्यक्रम को भारत सरकार के आवास एवं शहरी कार्य मंत्रालय से उत्कृष्टता पुरस्कार मिला है। साथ ही एक ट्रॉफी भी प्रदान की गई है। राज्य की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने अपने एक्स हैंडल पर एक संदेश में यह जानकारी दी। मुख्यमंत्री ने इस कार्य में शामिल सभी लोगों को हार्दिक बधाई भी दी।गौरतलब है कि कई वर्षों से, ऐप कैब सेवाएं देश के विभिन्न शहरों में बसों और टैक्सियों के साथ परिवहन के साधन के रूप में उभरी हैं। विभिन्न निजी ऐप कैब कंपनियां अन्य राज्यों के शहरों में वाहन चलाती हैं। इसी तरह, कोलकाता और बंगाल के उपनगरों में निजी कैब चलती हैं। आरोप है कि ऐप कैब के मामले में अलग-अलग समय पर समस्याएं उत्पन्न होती हैं। अलग-अलग समय पर बेलगाम किराया वसूली की शिकायतें भी आती हैं। कई ड्राइवरों द्वारा दुर्व्यवहार की शिकायतें सामने आने लगीं। जानकार हलकों के अनुसार, ऐसी शिकायतों का पहाड़ दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा था। उन ऐप कैब कंपनियों के प्रति यात्रियों और आम लोगों का गुस्सा भी दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा था।उस माहौल में, राज्य सरकार ने यात्रियों की सुविधा के लिए यात्री साथी ऐप लॉन्च किया। बताया गया है कि इस ऐप के ज़रिए गंतव्य तक जाने के लिए आसानी से कार बुक की जा सकती है। किराया भी आम लोगों की पहुंच में है। इस ऐप के ज़रिए कार बुक करने से यात्रियों को कई बार फायदा हुआ है। आम लोगों को यह सेवा पश्चिम बंगाल सरकार के आईटी और ई विभाग के ज़रिए मिलती है। इस बार, केंद्र सरकार के आवास एवं शहरी कार्य मंत्रालय ने बंगाल के इस यात्री साथी को सर्वश्रेष्ठ चुना।इस दिन, मुख्यमंत्री ने अपने एक्स हैंडल पर लिखा-इस असाधारण कार्य में शामिल सभी लोगों को मेरी हार्दिक बधाई। एक बार फिर साबित हुआ है, बंगाल जो आज सोचता है, भारत कल सोचता है। सर्वश्रेष्ठ शहरी परिवहन परियोजना के लिए एक ट्रॉफी भी प्रदान की गई। मालूम हो कि इस सेवा में अब तक 1.42 करोड़ से ज़्यादा यात्राएं पूरी हो चुकी हैं। 1.3 लाख से ज़्यादा ड्राइवर इस गतिविधि से जुड़े हैं। कोलकाता और उसके उपनगरों में 45 लाख से ज़्यादा यात्री इस यात्री साथी सेवा का लाभ उठा चुके हैं। बताया जा रहा है कि बंगाल में शुरू की गई इस सेवा का देश के कई अन्य राज्यों ने भी अनुकरण किया है।

चिंगरीघाटा में यातायात की भीड़भाड़ कम करने के लिए

केएमडीए की पहल पर कैप्टन वेरी के पास बनाया जाएगा एक नया पुल

निज संवाददाता : शहर के सबसे व्यस्त और भीड़भाड़ वाले इलाकों में से एक चिंगरीघाटा और उसके आसपास के बाईपास क्षेत्र में इस बार बुनियादी ढांचे के विकास का एक नया दौर शुरू हो रहा है। यातायात की भीड़भाड़ की समस्या को कम करने के लिए, कोलकाता महानगर विकास प्राधिकरण (केएमडीए) ने साइंस सिटी चौराहे से कैप्टन वेरी तक एक नया स्टील ब्रिज बनाने का फैसला किया है। योजना के अनुसार, उम्मीद है कि इस पुल के बन जाने के बाद इलाके में रोज़ाना होने वाली यातायात की भीड़भाड़ काफी हद तक कम हो जाएगी।गौरतलब है कि चिंगरीघाटा चौराहा शहर के पूर्वी हिस्से में एक बहुत ही महत्वपूर्ण यातायात जंक्शन है। साल्टलेक, न्यूटाउन, तिलजला, कस्बा, रूबी या गरिया से आने वाले बड़ी संख्या में वाहन इस सड़क पर आते हैं, जिसके परिणामस्वरूप अक्सर भारी यातायात जाम लग जाता है। केएमडीए ने इस समस्या के समाधान के लिए पहल की है। योजना के अनुसार, यह पुल कैप्टन वेरी के पास दक्षिण से उत्तर की ओर बाईपास पर एक वैकल्पिक प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करेगा जिससे मुख्य सड़क पर दबाव काफी हद तक कम हो जाएगा। केएमडीए सूत्रों के अनुसार, लगभग 60 मीटर लंबे और 10 मीटर चौड़े इस पुल के प्रस्तावित डिज़ाइन में आधुनिक कारवे और सुरक्षित फुटपाथ हैं। परियोजना की अनुमानित लागत लगभग 10 करोड़ रुपये है। निविदा प्रक्रिया शुरू हो चुकी है और राज्य सरकार से प्रारंभिक स्वीकृति भी मिल चुकी है।केएमडीए अधिकारियों ने बताया कि चिंगरीघाटा के पास बाईपास खंड की वर्तमान संकीर्णता बड़ी कारों, बसों और मिनी बसों की गति को काफी कम कर देती है। नया पुल खुल जाने के बाद, ये वाहन बाईपास पर तेज़ गति से चल सकेंगे। विशेषज्ञों का मानना है कि इससे न केवल यातायात की भीड़ कम होगी, बल्कि ईंधन की बचत होगी और प्रदूषण भी कुछ हद तक कम होगा। केएमडीए ने बाईपास के चौड़ीकरण का लगभग 70 फीसद काम पूरा कर लिया है, जिसे दिसंबर तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। इसके साथ ही, पुल निर्माण के लिए प्रारंभिक भूमि सर्वेक्षण और डिज़ाइन योजना भी लगभग अंतिम चरण में है।अधिकारियों को उम्मीद है कि नए पुल के चालू होने के बाद, शहरवासियों को साइंस सिटी से कस्बा और रूबी तक रोजाना लगने वाले लंबे ट्रैफिक जाम से राहत मिलेगी। इस अवसंरचनात्मक विकास से पूर्वी कोलकाता और दक्षिण कोलकाता के बीच संपर्क में और वृद्धि होगी, जिससे राज्य के सबसे व्यस्त परिवहन गलियारों में से एक को बढ़ावा मिलेगा।

संपादकीय

बिहार में एनडीए की शानदार वापसी

बिहार में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) की जीत कोई आश्चर्य की बात नहीं है। न तो एग्ज़िट पोल और न ही गंभीर विश्लेषकों ने उस राज्य में सत्ता परिवर्तन की भविष्यवाणी की थी। लेकिन जिस तरह से बिहार ने सत्तारूढ़ सरकार को पुरस्कृत किया है, वह एनडीए के सबसे आशावादी घटक के लिए भी आश्चर्यजनक रहा होगा और उसके प्रतिद्वंद्वी, महागठबंधन को भी करारा झटका लगा होगा। एनडीए ने बिहार में भारी जीत हासिल की है, और इसके सभी प्रमुख घटकों ने असाधारण प्रदर्शन किया है। भारतीय जनता पार्टी ने 2020 की तुलना में अपनी सीटों की संख्या में सुधार किया है और बिहार की सबसे बड़ी पार्टी होने का दावा पेश किया है। नीतीश कुमार की जनता दल (यूनाइटेड) का पुनरुत्थान जिसने 2020 में 40 से थोड़ी अधिक सीटें जीती थीं और भी शानदार रहा है, पार्टी की चुनावी झोली 80 से अधिक सीटों तक पहुंच गई है, कुछ अनुमानों के अनुसार, चिराग पासवान की लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) ने एनडीए में सबसे अच्छा स्ट्राइक रेट दिया है। यह इस युवा नेता के राजनीतिक भविष्य के लिए शुभ संकेत है, खासकर जब नीतीश कुमार संन्यास ले लेंगे। लेकिन नीतीश ही एनडीए की जीत को अपनी जीत कह सकते हैं। उन्होंने कमज़ोर चुनावी प्रभाव, कथित खराब स्वास्थ्य और भाजपा द्वारा उनका ताज छीन लेने की अफवाहों को दरकिनार करते हुए, बिहार के चुनावी मानचित्र पर एक बार फिर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। महिला मतदाताओं के बीच उनका अटूट कद, अति पिछड़े वर्गों, गैर-यादवों और महादलितों की कुशल लामबंदी और उनके कल्याणकारी उपाय उनकी जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इस जीत का पैमाना निस्संदेह भाजपा को अन्य राज्यों में जीत के लिए और उत्साहित करेगा-खासकर बंगाल में। देखना यह है कि एनडीए बिहार में अपने बड़े-बड़े चुनावी वादों को कैसे पूरा करता है। इस बीच, महागठबंधन की रौशनी बुझ चुकी है। 2020 के अपने शानदार प्रदर्शन की तुलना में राष्ट्रीय जनता दल का लालटेन काफ़ी मंद पड़ गया है। यह स्पष्ट है कि तेजस्वी यादव यादव-मुस्लिम गठजोड़ से आगे अपनी पार्टी का सामाजिक आधार बढ़ाने में विफल रहे हैं। ऐसा लगता है कि इसका मुस्लिम समर्थन भी कम हुआ है, क्योंकि ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन ने पांच सीटें जीती हैं। महागठबंधन में लगातार पिछड़ रही कांग्रेस बिहार में उसे दावेदार क्यों माना जा रहा है? इस पार्टी का प्रदर्शन पिछली बार से भी बदतर रहा है। विपक्ष ने जिन मुद्दों पर अपना चुनावी मुद्दा बनाया था- बेरोज़गारी, वोट चोरी और निश्चित रूप से, भारत के चुनाव आयोग द्वारा मतदाता सूची का विशेष गहन पुनरीक्षण-उनमें से कोई भी बिहार के मतदाताओं के दिलों पर असर नहीं डाल पाया।

बाबु विष्णुराव पराड़कर और बंगाल की हिंदी पत्रकारिता की गौरवगाथा

आज जब हम बाबु विष्णुराव पराड़कर की जयंती मना रहे हैं, तब यह केवल एक महान पत्रकार को स्मरण करना नहीं, बल्कि उस युग की आत्मा को नमन करना है जिसने शब्दों को संघर्ष का हथियार बनाया। कोलकाता की गलियों से उठी वह आवाज़ आज भी हमें यह सिखाती है कि पत्रकारिता का उद्देश्य सत्ता की सेवा नहीं, समाज की सजगता है। बाबु विष्णुराव पराड़कर, प्रभाकर माचवे, लक्ष्मण नारायण गर्दे जैसे मनीषियों ने जो दीप जलाया, वह आज भी हिंदी पत्रकारिता के मार्ग को आलोकित कर रहा है।

प्रदीप ढेडिया

कोलकाता केवल भारत की सांस्कृतिक राजधानी ही नहीं, बल्कि भारतीय पत्रकारिता की भी जन्मभूमि है। यह शहर उन भाषायी सरोवरों में से एक है, जहां से अनेक धाराएं फूटकर राष्ट्रीय चेतना के सागर में प्रवाहित हुईं। कोलकाता ने जिस प्रकार उर्दू, फ़ारसी, अंग्रेज़ी और बांग्ला पत्रकारिता को जन्म दिया, उसी तरह उसने हिंदी पत्रकारिता को भी अपना वात्सल्यपूर्ण स्नेह प्रदान किया। हिंदी पत्रकारिता का यह 200वां वर्ष है। यह केवल इतिहास का पड़ाव नहीं, बल्कि जनचेतना, संघर्ष और सत्यनिष्ठा की अमर यात्रा का उत्सव है। 'उदन्त मार्तण्ड' से शुरू हुई यह यात्रा आज डिजिटल युग तक पहुंच चुकी है, पर इसकी आत्मा वही हैसमाज की आवाज़ बनना, अन्याय के विरुद्ध कलम उठाना और राष्ट्र की एकता को शब्द देना। यह द्विशताब्दी वर्ष हिंदी पत्रकारिता की वैचारिक शक्ति, लोकजागरण और लोकतंत्र के प्रति उसकी अमिट प्रतिबद्धता का प्रतीक है। यही वह भूमि है, जहां अनेक बांग्लाभाषी और मराठी भाषी पत्रकारों ने अपने श्रम, त्याग और विचारशीलता से हिंदी पत्रकारिता की नींव को इतना मज़बूत बनाया कि उसकी गूंज आज भी राष्ट्रीय विमर्श में सुनाई देती है। इस परंपरा के शीर्ष पर यदि किसी का नाम सर्वाधिक आदर से लिया जाता है, तो वह है बाबु विष्णुराव पराड़कर। उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक और बीसवीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों में जब कोलकाता राष्ट्रीय आंदोलन का केंद्र बन रहा था, तब यहां की पत्रकारिता भी स्वतंत्रत चेतना का संवाहक रूप ले रही थी। हिंदी पत्रकारिता का प्रारंभिक स्वरूप 'उदन्त मार्तण्ड' से आरंभ हुआ, पर आगे चलकर यह अनेक दिशाओं में विकसित हुआ। बंगाल की माटी ने इस विकास को अपने संस्कारों से सींचा। इस परंपरा में बांग्ला और मराठी भाषियों का योगदान अतुलनीय रहा लक्ष्मण नारायण गर्दे,

(जयंती पर विशेष)

प्रभाकर माचवे और बाबु विष्णुराव पराड़कर जैसे मनीषियों ने इसे नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। मराठी परिवार में जन्मे पराड़कर जी का झुकाव आरंभ से ही राष्ट्रवादी विचारधारा की ओर था। कोलकाता आने के बाद उन्होंने अपने पत्रकारिता जीवन की शुरुआत 'भारतमित्र' नामक हिंदी दैनिक से की। 'भारतमित्र' उस समय केवल एक पत्र नहीं था, बल्कि राष्ट्रीय जागरण का मंच था। पराड़कर जी ने इसमें अपने संपादन-कौशल और वैचारिक दृष्टि से ऐसी जान फूंक दी कि यह अख़बार हिंदी पत्रकारिता का मानदंड बन गया। पराड़कर जी का संपादन केवल समाचार संप्रेषण तक सीमित नहीं था। वे अख़बार को एक सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय मिशन मानते थे। उन्होंने 'भारतमित्र' को जनता की आवाज़ बनाया किसान, मज़दूर, स्त्री, शिक्षित वर्गसभी के प्रश्नों को समान संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया। उनके लेखों में एक ओर भाषा की सहजता और सौंदर्य था, तो दूसरी ओर विचारों की गहराई और संघर्षशीलता। उन्होंने पत्रकारिता को नैतिकता और जनहित की दृष्टि से जोड़ायह दृष्टिकोण आगे चलकर हिंदी पत्रकारिता की आत्मा बना। पराड़कर जी केवल पत्रकार नहीं, साहित्य-संस्कारों से सम्पन्न चिंतक भी थे। उन्होंने पत्रकारिता में भाषा को केवल सूचना का माध्यम नहीं, बल्कि लोकजागरण का औज़ार माना। उनकी लेखनशैली में मराठी दृढ़ता और हिंदी की मृदुलता का अद्भुत संगम दिखता है। वे सरल शब्दों में गूढ़ विचार कहने की क्षमता रखते थे।उनके संपादकीयों में साहित्यिक सौंदर्य और वैचारिक प्रखरता का ऐसा समन्वय मिलता है, जो आज भी प्रेरक है। उनका यह मानना था कि पत्रकारिता केवल घटनाओं का ब्यौरा नहीं, बल्कि समाज की आत्मा की व्याख्या है। वे सत्य को निडर होकर प्रस्तुत करते थे और किसी भी प्रकार के दबाव के आगे नहीं झुकते थे। यही कारण है कि उन्हें हिंदी पत्रकारिता का ''भीष्म पितामह'' कहा गया। अन्य मराठी मानुष पत्रकारों में लक्ष्मण नारायण गर्दे तथा प्रभाकर माचवे का योगदान भी बंगाल में हिंदी पत्रकारिता के इतिहास में अमिट है।लक्ष्मण नारायण गर्दे ने कलकत्ता में पत्रकारिता के क्षेत्र में अथक श्रम किया। उन्होंने हिंदी पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से जनता को शिक्षा, स्वराज और समाज-सुधार की दिशा में प्रेरित किया। प्रभाकर माचवे ने 'भारतीय भाषा परिषद' के माध्यम से हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के बीच सेतु का कार्य किया। उन्होंने यह सिद्ध किया कि भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि सांस्कृतिक एकता की आधारशिला है। इन सभी मनीषियों ने मिलकर बंगाल की भूमि पर हिंदी पत्रकारिता का ऐसा वृक्ष रोपा, जो कालांतर में सशक्त रूप से फलता-फूलता गया। पराड़कर जी की विरासत केवल उनके संपादन तक सीमित नहीं रही। उन्होंने आने वाली पीढ़ियों के लिए पत्रकारिता के आदर्श गढ़े सत्यनिष्ठा, निर्भीकता और जनहित के प्रति समर्पण। उनका जीवन बताता है कि पत्रकारिता में यदि नैतिकता और वैचारिक प्रतिबद्धता का अभाव हो, तो वह केवल व्यवसाय बनकर रह जाती है। उनके योगदान से प्रेरित होकर हिंदी पत्रकारिता ने स्वतंत्रता आंदोलन में अग्रणी भूमिका निभाई। बाद के वर्षों में 'आज', 'सारिका', 'धर्मयुग', 'साप्ताहिक हिंदुस्तान' जैसी पत्रिकाओं की वैचारिक जड़ें कहीं न कहीं पराड़कर जी की ही परंपरा से जुड़ी हैं। आज जब हम बाबु विष्णुराव पराड़कर की जयंती मना रहे हैं, तब यह केवल एक महान पत्रकार को स्मरण करना नहीं, बल्कि उस युग की आत्मा को नमन करना है जिसने शब्दों को संघर्ष का हथियार बनाया। कोलकाता की गलियों से उठी वह आवाज़ आज भी हमें यह सिखाती है कि पत्रकारिता का उद्देश्य सत्ता की सेवा नहीं, समाज की सजगता है। बाबु विष्णुराव पराड़कर, प्रभाकर माचवे, लक्ष्मण नारायण गर्दे जैसे मनीषियों ने जो दीप जलाया, वह आज भी हिंदी पत्रकारिता के मार्ग को आलोकित कर रहा है। उनकी जयंती पर यही संकल्प लेना होगा कि हम पत्रकारिता को पुनः वही नैतिक ऊंचाई और जनसेवा की भावना दें, जिसके प्रतीक स्वयं पराड़कर जी थे।

जानें अपना राशिफल

मेष

खुशखबरी वाला समय हो सकता है इसलिए जो भी काम कर रहे हैं फायदा अवश्य होगा, अचानक धन लाभ भी हो सकता है, कोई रुका हुआ मांगलिक कार्य पूरा हो सकता है, मन प्रसन्न रहेगा।

वृषभ

निराशा वाला समय हो सकता है इसलिए सिर्फ काम करने पर ध्यान रखने की आवश्यकता है, किसी के बहकावे में आने से बनता काम बिगड़ सकता है, आपसी सहमति बनाये रखें।

मिथुन

कल्याणकारी समय हो सकता है, कोई बहुत दिनों से रुका हुआ काम आगे बढ़ सकता है प्रयास करे, अपनी बुद्धिमानी से काम करने की आवश्यकता है, मन में उत्साह रहेगा।

कर्क

महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला समय हो सकता है, किसी परिवार के सदस्य से मतभेद भी हो सकता है, अपनी सोच सकारात्मक रखने की आवश्यकता है, अपने परिवार को प्रसन्न रखे।

सिंह

भ्रमित करने वाला समय हो सकता है इसलिए सिर्फ काम करने पर ध्यान रखने की आवश्यकता है, किसी के बहकावे में आने से बनता काम बिगड़ सकता है, मन शान्त रखे।

कन्या

मददगार समय हो सकता है इसलिए ज्यादा से ज्यादा काम करने पर ध्यान रखने की आवश्यकता है, कोई बड़ा काम करने का अवसर मिल सकता है प्रयास करे, मन में उत्साह रहेगा।

तुला

लाभदायक समय हो सकता है इसलिए ज्यादा से ज्यादा काम करने पर ध्यान रखने की आवश्यकता है, किसी पर भरोसा करके काम करने की जरूरत है, मन प्रसन्न रहेगा।

वृश्चिक

गौरवपूर्ण समय हो सकता है इसलिए जो भी काम कर रहे हैं फायदा अवश्य होगा, अचानक धन लाभ भी हो सकता है, किसी नये व्यक्ति से काम आगे बढ़ सकता है प्रयास करे, मन में उत्साह रहेगा।

धनु

सुधार करने वाला समय हो सकता है इसलिए सिर्फ काम करने पर ध्यान रखने की आवश्यकता है, किसी के चक्कर में आने से समय खराब हो सकता है, परिवार के लोग पूरा साथ दे सकते हैं।

मकर

नियंत्रण रखकर काम करने वाला समय हो सकता है, किसी परिवार के सदस्य से मतभेद भी हो सकता है सावधान रहे, कोई रुका हुआ मांगलिक कार्य पूरा हो सकता है।

कुंभ

संतोष रखकर काम करने वाला समय हो सकता है, किसी पर भरोसा करके काम करने की आवश्यकता है, कोई अधुरा काम पुरा हो सकता है, अपने परिवार को प्रसन्न रखे, मन चंचल रहेगा।

मीन

उत्तम समय हो सकता है, कोई बहुत बड़ा काम करने का अवसर मिल सकता है प्रयास करे, कोई रुका हुआ जमीन का काम आगे बढ़ सकता है, मन प्रसन्न रहेगा।

दुष्ट सर्प और कौवा

एक जंगल में एक बहुत पुराना बरगद का पेड़ था। उस पेड़ पर घोंसला बनाकर एक कौआ-कव्वी का जोड़ा रहता था। उसी पेड़ के खोखले तने में कहीं से आकर एक दुष्ट सर्प रहने लगा। हर वर्ष मौसम आने पर कव्वी घोंसले में अंडे देती और दुष्ट सर्प मौक़ा पाकर उनके घोंसले में जाकर अंडे खा जाता। एक बार जब कौआ व कव्वी जल्दी भोजन पाकर शीघ्र ही लौट आए तो उन्होंने उस दुष्ट सर्प को अपने घोंसले में रखे अंडों पर झपटते देखा। अंडे खाकर सर्प चला गया कौए ने कव्वी को ढाडस बंधाया प्रिये, हिम्मत रखो। अब हमें शत्रु का पता चल गया हैं। कुछ उपाय भी सोच लेंगे। कौए ने काफ़ी सोचा विचारा और पहले वाले घोंसले को छोड़ उससे काफ़ी ऊपर टहनी पर घोंसला बनाया और कव्वी से कहा यहां हमारे अंडे सुरक्षित रहेंगे। हमारा घोंसला पेड़ की चोटी के किनारे निकट हैं और ऊपर आसमान में चील मंडराती रहती हैं। चील सांप की बैरी हैं। दुष्ट सर्प यहां तक आने का साहस नहीं कर पाएगा। कौवे की बात मानकर कौव्वी ने नए घोंसले में अंडे दिए जिसमे अंडे सुरक्षित रहे और उनमें से बच्चे भी निकल आए। उधर सर्प उनका घोंसला ख़ाली देखकर यह समझा कि उसके डर से कौआ कव्वी शायद वहां से चले गए हैं पर दुष्ट सर्प टोह लेता रहता था। उसने देखा कि कौआ-कव्वी उसी पेड़ से उड़ते हैं और लौटते भी वहीं हैं। उसे यह समझते देर नहीं लगी कि उन्होंने नया घोंसला उसी पेड़ पर ऊपर बना रखा हैं। एक दिन सर्प खोह से निकला और उसने कौओं का नया घोंसला खोज लिया। घोंसले में कौआ दंपती के तीन नवजात शिशु थे। दुष्ट सर्प उन्हें एक-एक करके घपाघप निगल गया और अपने खोह में लौटकर डकारें लेने लगा। कौआ व कव्वी लौटे तो घोंसला ख़ाली पाकर सन्न रह गए। घोंसले में हुई टूट-फूट व नन्हें कौओं के कोमल पंख बिखरे देखकर वह सारा माजरा समझ गए। कव्वी की छाती तो दुख से फटने लगी। कव्वी बिलख उठी तो क्या हर वर्ष मेरे बच्चे सांप का भोजन बनते रहेंगे? कौआ बोला नहीं! यह माना कि हमारे सामने विकट समस्या हैं पर यहां से भागना ही उसका हल नहीं हैं। विपत्ति के समय ही मित्र काम आते हैं। हमें लोमड़ी मित्र से सलाह लेनी चाहिए। दोनों तुरंत ही लोमड़ी के पास गए। लोमड़ी ने अपने मित्रों की दुख भरी कहानी सुनी। उसने कौआ तथा कव्वी के आंसू पोंछे। लोमड़ी ने काफ़ी सोचने के बाद कहा मित्रो! तुम्हें वह पेड़ छोड़कर जाने की जरुरत नहीं हैं। मेरे दिमाग में एक तरकीब हैं, जिससे उस दुष्टसर्प से छुटकारा पाया जा सकता हैं। लोमड़ी ने अपने चतुर दिमाग में आई तरकीब बताई। लोमड़ी की तरकीब सुनकर कौआ-कव्वी खुशी से उछल पड़ें। उन्होंने लोमड़ी को धन्यवाद दिया और अपने घर लौट आएं। अगले ही दिन योजना अमल में लानी थी। उसी वन में बहुत बड़ा सरोवर था। उसमें कमल और नरगिस के फूल खिले रहते थे। हर मंगलवार को उस प्रदेश की राजकुमारी अपनी सहेलियों के साथ वहां जल-क्रीड़ा करने आती थी। उनके साथ अंगरक्षक तथा सैनिक भी आते थे। इस बार राजकुमारी आई और सरोवर में स्नान करने जल में उतरी तो योजना के अनुसार कौआ उड़ता हुआ वहां आया। उसने सरोवर तट पर राजकुमारी तथा उसकी सहेलियों द्वारा उतारकर रखे गए कपड़ों व आभूषणों पर नजर डाली। कपड़े के ऊपर राजकुमारी का प्रिय हीरे व मोतियों का विलक्षण हार रखा था कौव्वी ने राजकुमारी तथा सहेलियों का ध्यान अपनी और आकर्षित करने के लिए 'कांव-कांव' का शोर मचाया। जब सबकी नजर उसकी ओर घूमी तो कौआ राजकुमारी का हार चोंच में दबाकर ऊपर उड़ गया। सभी सहेलियां चीखी देखो, देखो! वह राजकुमारी का हार उठाकर ले जा रहा हैं। सैनिकों ने ऊपर देखा तो सचमुच एक कौआ हार लेकर धीरे-धीरे उड़ता जा रहा था। सैनिक उसी दिशा में दौड़ने लगे। कौआ सैनिकों को अपने पीछे लगाकर धीरे-धीरे उड़ता हुआ उसी पेड़ की ओर ले आया। जब सैनिक कुछ ही दूर रह गए तो कौए ने राजकुमारी का हार इस प्रकार गिराया कि वह सांप वाले खोह के भीतर जा गिरा। सैनिक दौड़कर खोह के पास पहुंचे। उनके सरदार ने खोह के भीतर झांका। उसने वहां हार और उसके पास में ही एक काले सर्प को कुडंली मारे देखा। वह चिल्लाया पीछे हटो! अंदर एक नाग है। सरदार ने खोह के भीतर भाला मारा। सर्प घायल हुआ और फुफकारता हुआ बाहर निकला। जैसे ही वह बाहर आया, सैनिकों ने भालों से उसके टुकडे-टुकडे कर डाले।

सीख : सूझ बूझ का उपयोग कर हम बड़ी से बड़ी ताकत और दुश्मन को हरा सकते हैं, बुद्धि का प्रयोग करके हर संकट का हल निकाला जा सकता है।

हल करो हीरो बनो

1. दुनिया का सबसे लंबा समुद्र तट कौन सा है?
(क) काप्सु कैनावेरल (ख) येलोस्टोन
(ग) कर्टिनिया (घ) क्वींसलैंड
2. आरबीआई के वर्तमान गवर्नर कौन हैं?
(क) शक्तिकांत दास (ख) रघुराम राजन
(ग) डी. सुब्बाराव (घ) संजय मल्होत्रा
3. संसार की सबसे पुरानी ज्ञात शिलालेख कहां पाई गई थी?
(क) मेसोपोटामिया (ख) मिस्र
(ग) भारत (घ) चीन
4. किस उपन्यासकार को ''बच्चों का साहित्यिक जनक'' माना जाता है?
(क) जॉर्ज ऑरवेल (ख) सी. एस. लुईस
(ग) जे. के. रोवलिंग (घ) लुईस कैरोल
5. पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगाने वाले प्राकृतिक उपग्रह को क्या कहते हैं?
(क) ग्रह (ख) उल्का
(ग) चंद्रमा (घ) तारे
6. प्रतिवर्ष ''विश्व उच्च रक्तचाप दिवस'' किस तारीख को मनाया जाता है?
(क) 18 मई को (ख) 14 मई को
(ग) 17 मई को(घ) 19 मई को

(उत्तर इसी अंक में)

मार लो मुस्की

पत्नी: ''अगर मैं खो गयी तो तुम क्या करोगे ?''
पतिः ''मैं अखबार में इश्तिहार दूंगा ।''
पत्नी: ''तुम कितने अच्छे हो, क्या लिखोगे ?
पतिः ''जिसको मिले उसकी।

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

छेदी लालः जल्दी से एक गिलास जूस दो, लड़ाई होने वाली है। एक गिलास जूस पीने के बाद
छेदी लालः एक गिलास और जूस दो, लड़ाई होने वाली है।
जूसवालाः लड़ाई कब होगी ?
छेदी लाल : जब तुम पैसे मांगोगे ।

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

मैडमः पिंकी कल तू स्कूल क्यो नहीं आई
पिंकीः मैडम में कल सपने में जापान पहूच गई थी
मैडमः अच्छा कालू तू कल क्यो नहीं आया।
कालूः मैडम में पिंकी को एयरपोर्ट पर छोड़ने गया था।

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

तिजोरी पर लिखा था, तोड़ने की जरूरत नहीं, बटन 'दबाओ खुल जाएगी।'
बटन दबाते ही पुलिस आ गई
पुलिसः तुम्हें अपनी सफाई में कुछ कहना है?
चोरः मां कसम, आज इंसानियत पर से विश्वास उठ गया!

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

बीवी ने फोन किया, ''आपको पड़ोसन कैसी लगती है?''
बीवी को खुश करने के लिए पति ने रिप्लाई दिया
''बंदरिया जैसी''
बीवी : 2 ड्रेस ख़रीद कर दो नही तो ये पड़ोसन को दिखा दूंगी..!!

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

पत्नी: जब हमने शादी की थी तब तो आप मुझे बड़े प्रशसनीय नामों से बुलाते थे, जैसे मेरी रस मलाई, मेरी रबड़ी, लेकिन अब इन नामों से क्यों नहीं बुलाते?
पतिः दूध की मिठाई कितने दिन ताज़ी रहेगी?

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

पत्नी गोलगप्पे खा रही थी। 20-25 खा लिए होंगे। फिर उसने पति से पुछा ''10 और खा लूं?''
पति बोला- ''खा ले नागिन ! खा ले !''
पत्नी ने गुस्से में प्लेट फैक दिया!''नागिन किसको बोला?
पति :-''अरे मैंने कहा ''ना-गिन'', खा ले जितने खाने हैं !

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

पति शराब पीकर घर आया लेकिन पत्नी की बातें ना सुननी पड़ें इसलिए वो अपना लैपटॉप लेकर काम करने का नाटक करने लगा
पत्नी : आज फिर पीकर आये हो
पति : नहीं तो
पत्नीः फिर अटैची खोलकर क्या टाइप कर रहा है बेवड़े ???

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

प्रेमी (प्रेमिका से) तुम मेरे सपनों में, ख्वाबो में, जज्बातों में रहती हो।
प्रेमिका (प्रेमी से)- भैया, तुमको किसी ने बेवकूफ बनाया है..
मैं तो दिल्ली में रहती हूँ।

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

एक लड़का रात को 2 बजे डॉक्टर को फोन लगाता है
ट्रिंग ट्रिंग..
लड़का : डॉक्टर साहब, मुझे नींद न आने की बीमारी है..!!
डॉक्टर : तो साले इसे फैला क्यों रहा है, कम से कम मुझे तो सोने दे..

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

माथापच्ची–14

4			2			8	5	
						9	4	1
	8	3						
		8		4		6	7	
5			7	2	1			8
	9	7		3		5		
						7	3	
8	3	5						
	4	6			2			9

नियम : प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक है, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी एवं खड़ी पंक्ति में एवं 3X3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते। उत्तर अगले अंक में

माथापच्ची 13 का हल

1	3	9	4	8	2	6	7	5
7	8	5	6	9	3	1	4	2
2	6	4	1	5	7	8	3	9
3	7	1	9	2	6	5	8	4
4	2	6	8	3	5	9	1	7
9	5	8	7	4	1	2	6	3
5	4	2	3	1	8	7	9	6
8	9	7	5	6	4	3	2	1
6	1	3	2	7	9	4	5	8

सड़क निर्माण में अनियमितता मामले में हरकत में आये अधिकारी

सालानपुर। सालानपुर एवं बाराबनी प्रखंड को जोड़ने वाली रूपनारायणपुर - गौरंगडीह सड़क की मरम्मत में बरती जा रही अनियमितता की ग्रामीणों की शिकायत एवं मामले में खबर प्रकाशित होने के बाद अधिकारियों की नींद टूटी गई है। अधिकारीयों की एक टीम मौके पर पहुँच सड़क से सैम्पल एकत्र कर ले गई। मालूम हो कि बाराबनी विधायक सह आसनसोल मेयर विधान उपाध्याय मामले की शिकायत एवं खबर को देख कड़ा रुख अपनाते हुए तुरंत सख्त कार्रवाई का साफ निर्देश दिया, उन्होंने ने कहा ₹यह जनता के पैसों की सड़क है, यहाँ ठेकेदार की किसी भी तरह की लापरवाही बर्दाश्त नही की जाएगी। शुक्रवार सुबह विधायक के निर्देश पर पूरी सरकारी मशीनरी मैदान में उतर

आई। जिला परिषद की एक विशेष टीम, सालनपुर प्रखंड के बीडीओ देबांजन विश्वास, जिला परिषद कर्मध्यक्ष , सालनपुर पंचायत समिति के उपाध्यक्ष विद्युत मिश्रा समेत सम्बन्धित विभाग के इंजीनियर अधिकारी मौके पर पहुँचे। मौके पर पहुँची टीम ने सड़क के अलग-अलग हिस्सों से पिच के नमूने लिए। जिसकी जाँच होगी, रिपोर्ट आएगी और उसके बाद ही काम सड़क का कार्य दोबारा शुरू होगा। वही मोके पर मौजूद सालनपुर ब्लॉक तृणमूल कांग्रेस के उपाध्यक्ष भोला सिंह ने कहाः ₹यह सड़क जनता के लिए है। ग्रामीणों की शिकायत मिलते ही विधायक ने सख़्त आदेश दिए हैं। सड़क निर्माण में कोई लापरवाही बर्दाश्त नही की जाएगी। अगर ठेकेदार सड़क निर्माण में लापरवाही करेगा, तो उन्हें पकड़कर काम बंद करवा दिया जाएगा। वही आरोप है कि 5 करोड़ से ज्यादा की इस परियोजना में पिच बहुत पतली परत में बिछाई गई है। कुसुमकनाली मोड़ इलाके में तो लोगों ने हाथ से पिच उठा कर दिखाया।स्थानीय ग्रामीणों के अनुसार उक्त सड़क से करीब 50 से 60 टन वजनी वाहन गुजरते है, भारी वाहनों की आवाजाही वाली सड़क पर इस तरह का सड़क टिक नहीं पायेगी। इसलिए ऐसे कोई भी कार्य को स्वीकार नहीं किया जाएगा।वही प्रशासन के दबाव में ठेकेदार पक्ष ने सफाई दी कि ठंड में पिच को जमने में समय लगता है, लेकिन ज़िला परिषद के कर्मध्यक्ष ने उन्हें दो टूक कह दियाः ठेकेदार पाँच साल तक इसके रखरखाव के लिए ज़िम्मेदार है। अगर पिच हाथ से उखाड़ जा रही है, तो यह किसी भी तरह से स्वीकार्य नहीं है। जाँच कराई जाएगी और अगर कोई खामी पाई गई, तो कार्रवाई की जाएगी।उधर, पश्चिम बंगाल राज्य ग्रामीण विकास एजेंसी के जिला इंजीनियर सब्यसाची ओझा के निर्देश पर पहुचे टीम ने सेम्पल एकत्र किये। वही शुक्रवार उन्होंने बताया कि टीम अभी तक उनके पास नही पहुँची है बुधवार तक रिपोर्ट आ सकती है। हालांकि उन्होंने जांच की रिपोर्ट आने से पहले ही ठेकेदार के काम को सही ठहराते हुए कहा कि टीम ने सब ठीक ही कहा है। वही दूसरी तारफ ग्रामीणों की बस इतनी मांग है कि सड़क टिकाऊ और गुणवत्तापूर्ण बने।

समाजसेवी कृष्णा प्रसाद को लेकर लोगों को मन में जिज्ञासा, लोगों ने कहा

क्या इस विधानसभा चुनाव में बनेंगे प्रत्याशी, जीत होगी तय

आसनसोल। विशिष्ट समाजसेवी कृष्णा प्रसाद द्वारा पिछले कुछ वर्षों से जिले के 9 विधानसभा में समाजिक कार्यो को लेकर काफी सराहाना की जा रही है। लोग उनके कार्यो को लेकर चौक चौराहों पर चर्चा करते नहीं थकते है। गंभीर समाचार के संवाददाता की जानकारी के अनुसार समाजसेवी कृष्णा प्रसाद ने कई ऐसे कार्य किए है जो आसनसोल के ही नहीं बल्कि पूरे राज्य में इतिहास रच दिया। वही बड़े धार्मिक पूजा यज्ञ हो या फिर छठ पूजा हो। वहीं विगत कुछ दिनों पहले महाकुभ मेले को लेकर लोग काफी उत्साहित थे। हालांकि आर्थिक स्थिति सहीं नहीं होने के कारण कई लोग कुंभ मेले में जाने में असमर्थ थे। लेकिन उनके सपनों को पूरा करने के लिए समाजसेवी कृष्णा प्रसाद ने अपना हाथ बढ़ाया और लगभग 10 एसी बसों से उनके सपनों तक पहुंचाने में काफी सराहनीय कार्य किया है। राजनीतिक सूत्रों के हवाले से यह खबर उठ कर आ रहीं है कि वे इस बार भाजपा के प्रत्याशी विधानसभा चुनाव में होंगे। साथ ही यह भी कहकसा उठाया जा रहा है कि वो चाहे जिस विधानसभा से चुनाव किसी भी राजनीतिक पार्टी से लड़ेंगे उनकी भारी मतों से विजय तय है। लोगों का

विश्वास यह है कि जब वो कुछ भी नहीं थे तो इतना सारा समाजिक कार्य कर रहे है। कई करोड़ रूपए की लागत से लोगों का सपना पूरा कर रहे है। लोगों ने कहा कि यदि समाजसेवी कृष्णा प्रसाद कहे तो उनके बुलावे पर हजारों की तदाद तो छोड़िये लाखों की संख्या में लोग उनके पास खड़े दिखेंगे।

जामुड़िया में पेयजल संकट को लेकर हाइवे सड़क जाम

जामुड़िया। आसनसोल नगर निगम के वार्ड नंबर 10 के जामुड़िया स्थित निघा नीचू सेंटर इलाके में पेयजल संकट को लेकर स्थानीय लोगों में आक्रोश फैल गया। गुरुवार को इलाके के लोगों ने विरोधस्वरूप जामुरिया के श्रीपुर मोड़ पर 19 नंबर राष्ट्रीय राजमार्ग को अवरुद्ध कर प्रदर्शन किया।स्थानीय निवासियों का आरोप है कि लंबे समय से इस क्षेत्र में पेयजल की गंभीर समस्या बनी हुई है, लेकिन प्रशासन की ओर से अब तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया है। इसी के विरोध में लोगों ने सड़क जाम कर अपना रोष व्यक्त किया। प्रदर्शनकारियों की मांग है कि प्रशासन अविलंब इलाके में पेयजल की समस्या का समाधान करे ताकि लोगों को राहत मिल सके।

एजेंट को ट्रांसफर की मांग समेत विभिन्न मांगों को लेकर श्रमिकों ने कार्य ठप कर किया प्रदर्शन

सालानपुर। ईसीएल के सालानपुर एरिया के डाहबर कोलियरी में कार्यरत श्रमिकों ने तृणमूल कांग्रेस के श्रमिक संगठन केकेएससी के बैनर तले शनिवार सुबह कार्य ठप कर कोलियरी के वर्क्स कार्यालय के सामने अभिकर्ता (एजेंट) को स्थानांतरित करने की मांग की टेम्पलेट के साथ विभिन्न मांगों को लेकर किया प्रदर्शन। श्रमिकों ने कोलियरी में व्याप्त विभिन्न कुप्रबंधन और लापरवाही को लेकर गहरा रोष व्यक्त किया। प्रदर्शनकारी श्रमिकों ने 'अभिकर्ता के ट्रांसफर' और 'कोलियरी बचाओ' की तख्तियां भी ले रखी थीं।इस विरोध कार्यक्रम में श्रमिक नेता दिनेश लाल श्रीवास्तव भी मौजूद थे। प्रदर्शनकारी श्रमिकों ने कोलियरी प्रबंधन पर कई गंभीर

आरोप लगाए और अपनी मांगें रखीं, जिसमें श्रमिको की सुरक्षा सुनश्चित करने, असुरक्षित डंपर मार्ग को सही करने जिससे बड़ा हादसा ना घटित हो, समय पर वेतन भुगतान , कई कर्मचारी ऐसे हैं जो पिछले बीस वर्षों से एक ही स्थान पर काम कर रहे हैं, लेकिन उन्हें अभी तक पदोन्नति नहीं मिली है। उन्हें तत्काल पदोन्नति, पेयजलापूर्ति, महिला एवं पुरुष कर्मियों के लिऐ शौचालय की उचित व्यवस्था, समेत अन्य मांगों को रखा।प्रदर्शन की सूचना पाकर मौके पर पहुँचे सालानपुर एरिया कार्यालय से प्रबंधक(एचआर) कुमार गौरब सेनगुप्ता एवं प्रबंधक (प्रशासनिक) अमिताभ चक्रबर्ती ने श्रमिकों की सभी मांगो को लिखा एवं मामले में उच्च अधिकारियों के सामने बात कर रखने के अस्वासन दिया जिसके बाद श्रमिक प्रदर्शन से सटे। इस दौरान करीब 3 घंटे तक ओसीपी का सभी कार्य बाधित रहा। श्रमिकों ने चेतावनी दी है कि यदि उनकी मांगें जल्द पूरी नहीं की गईं। तो यह आंदोलन और बड़े रूप में किया जायेगा।

बकाया वेतन पर पीएचई कॉन्ट्रेक्टर कर्मियों का विरोध प्रदर्शन

आसनसोल। ऑल बंगाल तृणमूल पीएचई कॉन्ट्रैक्ट वर्कर्स यूनियन पश्चिम बर्दवान जिला कमेटी की ओर से आसनसोल के पीएचई कार्यालय के सामने जोरदार विरोध प्रदर्शन किया गया। यूनियन सदस्यों ने बताया कि जिले में पंप ऑपरेटर और बाल्व ऑपरेटरों को पिछले दो महीनों से वेतन नहीं मिला है। इसको लेकर कर्मचारियों में गहरा रोष है। उनकी प्रमुख मांग है कि पीएचई कर्मियों को कॉन्ट्रैक्टर के अधीन से हटाकर सीधे पीएचई विभाग के अधीन लाया जाए, ताकि वेतन समय पर मिल सके। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि उनकी ड्यूटी 24 घंटे की होती है, जिसके लिए कोई निश्चित समय सीमा तय नहीं की गई है। कर्मचारियों ने मांग की कि ड्यूटी के समय की भी स्पष्ट व्यवस्था की जाए, जिससे वे समय से काम पर आ सकें और समय से अपने घर लौट सकें।

सरकारी परियोजनाओं में अनिवार्य की गई जियो टैगिंग

निज संवाददाता : नवान्न ने पश्चिम बंगाल सरकार के विभिन्न विभागों की परियोजनाओं की प्रगति की निगरानी में एक और कदम आगे बढ़ाया है। अब से सभी सरकारी निर्माण परियोजनाओं में जियो टैगिंग प्रणाली को जोड़ दिया गया है। हाल ही में वित्त विभाग द्वारा इस संबंध में एक नई अधिसूचना जारी की गई है। इस प्रणाली के परिणामस्वरूप, यह माना जाता है कि परियोजना कार्यान्वयन के प्रत्येक चरण में कार्य की प्रत्यक्ष और पारदर्शी निगरानी प्रशासनिक हलकों में संभव हो सकेगी।इससे पहले, वित्त विभाग ने सरकारी परियोजनाओं की प्रगति की निगरानी के लिए यूनिफाइड प्रोजेक्ट मैनेजमेंट सिस्टम (यूपीएमएस) नामक एक विशेष पोर्टल लॉन्च किया था। पिछले दो वर्षों से, राज्य के सभी विभागों को अपने निर्माणाधीन परियोजनाओं की जानकारी इस पोर्टल पर दर्ज करनी होती है। परियोजना के शुरू होने से लेकर अंतिम चरण तक काम कितना आगे बढ़ा है, इसकी रीयल-टाइम अपडेट भी इस पोर्टल पर देखी जा सकती है। परिणामस्वरूप, इस बार जियो टैगिंग को जोड़ा गया है ताकि यदि किसी परियोजना में देरी हो रही है तो उसे सीधे नवान्न से पहचाना जा सके। इस तकनीक के माध्यम से, किसी परियोजना से संबंधित स्थिर चित्र या वीडियो क्लिप में निर्देशांक, समय और दिनांक स्वचालित रूप से जुड़ जाते हैं। यानी, यह आसानी से सत्यापित किया जा सकता है कि प्रस्तुत किया जा रहा चित्र या वीडियो परियोजना के वास्तविक स्थान और समय से मेल खाता है या नहीं। परिणामस्वरूप, परियोजना की वास्तविक स्थिति के साथ ऑनलाइन प्रदान की गई जानकारी की संगति की जांच करना आसान हो जाएगा।वित्त विभाग के अधिकारियों के एक वर्ग के अनुसार, इस पहल का उद्देश्य राज्य की विकास परियोजनाओं में पारदर्शिता बढ़ाना है। यदि आवश्यक हो तो जवाब मांगें। नवान्न ने यह पहल यह सुनिश्चित करने के लिए की है कि कोई भी विभाग परियोजना के पैसे को बिना कुछ किए न छोड़े। क्योंकि, यदि निर्धारित समय के भीतर काम आगे नहीं बढ़ता है, तो वित्त विभाग आवंटित धन वापस ले लेता है।

संशोधित हो सकता है कोलकाता नगर निगम का अधिनियम

निज संवाददाता : कोलकाता में, स्वीकृत डिज़ाइन से हटकर छोटे-मोटे निर्माण लगभग आम बात हो गई है। अतिरिक्त कंगनी, सीढ़ियां, छत के एक कोने में छोटे-छोटे मंदिरकई मामलों में, ये घर के मालिकों द्वारा बनाए जाते हैं, भले ही वे मूल डिज़ाइन में न हों। कोलकाता नगर निगम के भवन अधिनियम में ऐसे बदलावों को मामूली विचलन कहा जाता है। अब तक, ऐसे अवैध निर्माणों को गिराने या नियमित करने का निर्णय मेयर और मेयर परिषद के पास होता था। लेकिन इस बार, नगर निगम इस अधिकार का कुछ हिस्सा सीधे भवन विभाग के महानिदेशक को सौंपने जा रहा है। सूत्रों के अनुसार, मेयर परिषद की हालिया बैठक में इस पर चर्चा हुई और मेयर परिषद के अधिकांश सदस्यों ने मेयर फिरहाद हकीम के प्रस्ताव पर सहमति जताई।पिछले कुछ वर्षों में, नगर निगम प्रशासन ने अवैध निर्माणों को रोकने के लिए सख़्ती बढ़ा दी है। परिणामस्वरूप, भवन विभाग में मामूली विचलन नियमितीकरण के लिए आवेदनों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। हालात ये हैं कि मेयर परिषद की मासिक बैठक में आने वाली लगभग 60 से 70 प्रतिशत फाइलें इसी मुद्दे से जुड़ी होती हैं।

जीवनशैली से जुड़ी सबसे गंभीर बीमारियों में शामिल है डायबिटीज

डॉ. किंगशुक गोस्वामी होम्योपैथी चिकित्सक

मधुमेह, जिसे अंग्रेज़ी में डायबिटीज मेलिटस कहा जाता है, आज की सबसे तेजी से बढ़ती जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों में से एक है। यह एक ऐसी स्थिति है जिसमें शरीर में रक्त में शर्करा (ब्लड शुगर) का स्तर सामान्य से अधिक हो जाता है। यह समस्या तब उत्पन्न होती है जब शरीर पर्याप्त मात्रा में इंसुलिन का निर्माण नहीं कर पाता या निर्मित इंसुलिन का सही उपयोग नहीं कर पाता। इंसुलिन एक हार्मोन है जो अग्न्याशय (पैनक्रियाज) द्वारा बनता है और यह रक्त में उपस्थित ग्लूकोज़ को कोशिकाओं तक पहुंचाकर ऊर्जा में परिवर्तित करने में मदद करता है। यह शरीर की इंसुलिन बनाने या उसका उपयोग करने की क्षमता में कमी के कारण होता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के अनुसार, भारत को ''विश्व की मधुमेह राजधानी'' कहा जाता है क्योंकि यहां मधुमेह के रोगियों की संख्या बहुत तेजी से बढ़ रही है।आइए विस्तार से जानते हैं डायबिटीज के बारे में डायबिटीज क्या है?डायबिटीज एक मेटाबॉलिक विकार है जिसमें शरीर में ब्लड शुगर का स्तर बढ़ जाता है। यह इंसुलिन की कमी या इंसुलिन के प्रति शरीर की प्रतिरोधक क्षमता के कारण होता है। इंसुलिन एक हार्मोन है जो पाचन ग्रंथि द्वारा उत्पादित होता है और यह शरीर की कोशिकाओं को ग्लूकोज को ऊर्जा के रूप में उपयोग करने में मदद करता है। डायबिटीज के प्रकार1. टाइप 1 डायबिटीज : यह एक ऑटोइम्यून (स्व-प्रतिरक्षित) बीमारी है जिसमें शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली इंसुलिन बनाने वाली कोशिकाओं पर हमला कर उन्हें नष्ट कर देती है। परिणामस्वरूप, शरीर में इंसुलिन का निर्माण नहीं हो पाता और मरीज को बाहरी इंसुलिन लेना पड़ता है। यह प्रकार अक्सर बचपन या किशोरावस्था में देखा जाता है।2. टाइप 2 डायबिटीज : यह डायबिटीज का सबसे आम रूप है, जिसमें शरीर इंसुलिन का सही तरीके से उपयोग नहीं कर पाता या इंसुलिन उत्पन्न करने में कठिनाई होती है। इसमें शरीर इंसुलिन का उत्पादन तो करता है, लेकिन उसका सही उपयोग नहीं कर पाता। यह मधुमेह का सबसे सामान्य प्रकार है। यह आमतौर पर मोटापा, असंतुलित आहार, शारीरिक निष्क्रियता और तनाव के कारण होता है। यह धीरे-धीरे विकसित होने वाला रोग है और कई वर्षों तक बिना लक्षणों के रह सकता है।3. प्रेग्नेंसी डायबिटीज : यह गर्भावस्था के दौरान होता है और आम तौर पर प्रसव के बाद ठीक हो जाता है। गर्भावधि मधुमेह की स्थिति गर्भावस्था के दौरान उत्पन्न होती है। इसमें कुछ महिलाओं के शरीर में इंसुलिन की प्रभावशीलता घट जाती है, जिससे ब्लड शुगर बढ़ जाता है। अगर सही देखभाल न की जाए तो यह मां और बच्चे दोनों के लिए खतरनाक साबित हो सकता है।4. लेटेंट ऑटोइम्यून डायबिटीज इन एडल्ट्स (एलएडीए) : यह एक प्रकार का डायबिटीज है जो आमतौर पर 30 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों में होता है।डायबिटीज के कारण- आनुवंशिक कारण- मोटापा या अधिक वज़न- शारीरिक निष्क्रियता- खराब आहार/असंतुलित आहार (ज्यादा मीठा, तली-भुनी चीज़ें, पैक्ड फूड)- उम्र बढ़ना- नींद की कमी और अनियमित दिनचर्या- तनाव- कुछ दवाएं जैसे कि स्टेरॉयड और कुछ मानसिक स्वास्थ्य दवाएंडायबिटीज के लक्षणमधुमेह के शुरुआती लक्षणों को अक्सर लोग नजरअंदाज कर देते हैं। समय रहते इन्हें पहचानना बहुत ज़रूरी है।- बार-बार प्यास लगना- बार-बार पेशाब आना- थकान- वजन कम होना- घाव धीरे-धीरे ठीक होना- त्वचा पर संक्रमण- हाथ-पैरों में झुनझुनी या सुन्नपन- दृष्टि में कमी- दृष्टि धुंधली होनायदि ये लक्षण लगातार बने रहें, तो तुरंत चिकित्सक से संपर्क करना चाहिए।डायबिटीज से बचाव- स्वस्थ आहार लें- नियमित व्यायाम करें- वजन कंट्रोल में रखें- तनाव कम करें- नियमित स्वास्थ्य जांच कराएं- धूम्रपान और शराब से बचेंमधुमेह से होने वाली जटिलताएंअगर मधुमेह का सही समय पर इलाज और नियंत्रण न किया जाए, तो यह कई गंभीर समस्याओं का कारण बन सकता है, जैसे-हृदय रोग, किडनी फेल्योर, न्यूरो पैथी, रेटिनोपैथी (आंखों की कमजोरी या अंधापन), पैरों के घाव या संक्रमण और मस्तिष्काघात (स्ट्रोक)। इन जटिलताओं से बचने के लिए ब्लड शुगर, ब्लड प्रेशर और कोलेस्ट्रॉल का नियंत्रण बहुत आवश्यक है।मधुमेह की रोकथाम और प्रबंधनमधुमेह एक ''लाइफस्टाइल डिज़ीज़'' है, जिसे सही जीवनशैली अपनाकर नियंत्रित किया जा सकता है।कुछ महत्वपूर्ण सुझाव :1. संतुलित आहारभोजन में साबुत अनाज, हरी सब्जियां, फल, दालें और फाइबर युक्त पदार्थ शामिल करें।मीठे पेय पदार्थ, मिठाइयां और जंक फूड से दूरी बनाएं।खाना समय पर और सीमित मात्रा में खाएं।2. नियमित व्यायाम और योगरोज़ाना कम से कम 30 मिनट पैदल चलें या हल्का व्यायाम करें। योगासन जैसे भुजंगासन, धनुरासन, त्रिकोणासन, मकरासन, मंडूकासन आदि अग्न्याशय की कार्यक्षमता को बढ़ाते हैं। प्राणायाम जैसे अनुलोम-विलोम, कपालभाति, भ्रामरी और नाड़ी शोधन तनाव को कम कर इंसुलिन की कार्यक्षमता बढ़ाते हैं।3. तनाव नियंत्रणध्यान (मेडिटेशन), योग और पर्याप्त नींद से मानसिक संतुलन बना रहता है।तनाव कम करने से हार्मोनल संतुलन बेहतर होता है जिससे ब्लड शुगर नियंत्रित रहता है।4. नियमित जांचब्लड शुगर स्तर की नियमित जांच करवाते रहें।1 (हीमोग्लोबिन) टेस्ट हर 36 महीने में करवाना चाहिए ताकि दीर्घकालिक नियंत्रण का आकलन हो सके।5. डॉक्टर की सलाह अनुसार दवा या इंसुलिनकभी भी स्वयं दवा बंद न करें या मात्रा न बदलें।होम्योपैथिक उपचारहोम्योपैथी में डायबिटीज के उपचार के लिए कई दवाएं हैं। कुछ प्रमुख दवाएं हैं :-सिरियम ऑक्सालिकम : यह दवा डायबिटीज के लिए एक प्रभावी उपचार है।-गिम्नेमिया सिल्वेस्ट्रिस : यह दवा ब्लड शुगर को नियंत्रित करने में मदद करती है।-यूरेनियम नाइट्रिकम : यह दवा डायबिटीज के लक्षणों को कम करने में मदद करती है।-फॉस्फोरस : यह दवा डायबिटीज के कारण होने वाले तंत्रिका दर्द को कम करने में मदद करती है।-कैल्केरिया कार्बोनिका : यह दवा डायबिटीज के कारण होने वाले वजन बढ़ने को कम करने में मदद करती है।डॉक्टर की सलाह से ही दवा, आहार और व्यायाम में परिवर्तन करें।1 (हीमोग्लोबिन) टेस्ट हर 36 महीने में करवाना चाहिए ताकि दीर्घकालिक नियंत्रण का आकलन हो सके।योग और डायबिटीजयोग केवल एक व्यायाम नहीं, बल्कि एक सम्पूर्ण जीवनशैली है। योग के नियमित अभ्यास से शरीर में रक्त संचार सुधरता है, तनाव कम होता है, और अग्न्याशय की कोशिकाएं सक्रिय होती हैं। अनुलोम-विलोम और कपालभाति जैसे प्राणायाम रक्त शुद्धिकरण और चयापचय (मेटाबोलिज्म) को सुधारते हैं। योग डायबिटीज के लिए एक प्रभावी उपचार है। कुछ प्रमुख उपयोगी योगासन जो मधुमेह रोगियों के लिए लाभदायक हैं : -वज्रासन : यह आसन पाचन को सुधारता है और ब्लड शुगर को नियंत्रित करता है।-शवासन : यह आसन तनाव को कम करता है और ब्लड शुगर को नियंत्रित करता है।-भुजंगासन : यह आसन पाचन को सुधारता है और ब्लड शुगर को नियंत्रित करता है।-धनुरासन : यह आसन पाचन को सुधारता है और ब्लड शुगर को नियंत्रित करता है।होम रेमेडीजडायबिटीज के लिए कई होम रेमेडीज हैं। कुछ प्रमुख होम रेमेडीज हैं :-आमला : आमला ब्लड शुगर को नियंत्रित करने में मदद करता है।-मेथी : मेथी ब्लड शुगर को नियंत्रित करने में मदद करती है।-करेला : करेला ब्लड शुगर को नियंत्रित करने में मदद करता है।-जामुन : जामुन ब्लड शुगर को नियंत्रित करने में मदद करता है।निष्कर्षडायबिटीज एक गंभीर बीमारी है, लेकिन सही इलाज और जीवनशैली में बदलाव के साथ इसे नियंत्रित किया जा सकता है। यह कोई सजा नहीं, बल्कि शरीर द्वारा दिया गया संकेत है कि हमें अपनी जीवनशैली सुधारने की आवश्यकता है।अगर समय पर जागरूकता, सही आहार, योग, प्राणायाम ,होम्योपैथिक उपचार और होम रेमेडीज डायबिटीज के लिए प्रभावी उपचार हैं। और नियमित चिकित्सकीय देखभाल अपनाई जाए, तो मधुमेह को पूर्ण रूप से नियंत्रित किया जा सकता है।याद रखें''थोड़ी सावधानी, नियमितता और सकारात्मक सोच ही मधुमेह से बचाव की सबसे बड़ी औषधि है।''

डायबिटीज मेलिटस एक ऐसी बीमारी है जिसमें शरीर में ब्लड शुगर का स्तर बढ़ जाता है। यह बढ़ती जीवनशैली से जुड़ी बीमारी है।

भू-धसान और काला कारोबार: अवैध कोयला खुली खदान में जान की कोई कीमत नहीं

शिल्पांचल के कई जगहों पर धड़ल्ले से की जा रही अवैध कोयले की तस्करी

आसनसोल। जिंदगी के बदले काले कोयले का अंधेरा पश्चिम बर्धमान में यह दृश्य कोई नया नहीं, फिर भी हर बार दिल दहला देता है। शिलपांचल के कई हिस्सों में अवैध कोयले की तस्करी धड़ल्लेले की जा रही है। जिसे लेकर प्रशासन भी मौन दिखाई दे रहा है। वहीं रात के अंधेरे में ये काला धंधा खेला जा रहा है। आखिरकार ये लोग किसके पनाह से इतनी बड़ी तस्करी कैसे कर रहे है। लोग अवैध खदानों में दब कर मरे जा रहे है लेकिन पुलिस प्रशासन को इसकी चू तक नहीं करती है। वहीं सीआईएसएफ अपनी कार्य काफी गंभीरता से कर रहीं है। सूत्रों की खबर शुक्रवार की रात बाराबनी थाना क्षेत्र के चरनपुर ओपन खदान में धसने से 18 वर्षीय युवक सौरभ गोस्वामी की मौत हो गई। वहीं उसके पिता निमाई गोस्वामी अब तक लापता हैं। दामोनी बाजार के इस श्रमिक परिवार का रोना आज पूरे इलाके को झकझोर रहा है। पुलिस ने मृत शरीर को बरामद कर आसनसोल जिला अस्पताल भेज दिया। लापता निमाई बाबू की तलाश अब भी जारी है। स्थानीय लोगों की आंखों में डर, असुरक्षा और कोयला माफियाओं द्वारा गरीबी का इस्तमाल दिखाई दे रहा है। यह मौत सिर्फ एक युवक की नहीं, बल्कि पूरे समाज की विफलता का प्रतीक है।चरनपुर की यह खुली खदान लंबे समय से अवैध रूप से सक्रिय थी। आरोप लग रहे है कि सरकारी प्रतिबंध के बावजूद रात के अंधेरे में कोयले की खुदाई का काम चलता था। सवाल उठ रहे हैं। इतने बड़े क्षेत्र में यह अवैध खनन होता रहा और सीआईएसएफ की नजर में क्यों नहीं आया? जिन पर कोयला संपदा की सुरक्षा की जिम्मेदारी है, उनके सामने ही आम लोग खदान में उतरते हैं। कोई मजबूरी में, कोई लालच में, तो कोई रोटी की तलाश में।चरनपुर, सालानपुर, रानीगंज, बाराबनी पूरा कोयला क्षेत्र आज मौत की खदान में तब्दील हो चुका है। हर दिन कोई न कोई उस अंधेरे में उतरता है, जहां न सुरक्षा है, न रोशनी। यहां जिंदगी सस्ती है और कोयला ही मुद्रा बन चुका है।लेकिन क्यों? जवाब साफ है। जहां रोजगार का कोई विकल्प नहीं, छोटे उद्योग बंद हैं, युवाओं के हाथों में काम की जगह बेरोजगारी की पहचान है, वहां कोयले की काली धूल ही उम्मीद है। वही उम्मीद अब मौत का जाल बन गई है।सीआईएसएफ की भूमिका को लेकर क्षेत्र में आक्रोश फैल गया है। स्थानीय लोग पूछ रहे हैं। रात में जब ट्रकों से कोयला जाता है, तब पहरेदारों की आंखें बंद क्यों रहती हैं? कोई कह रहा था। जो लोग खदान में उतरते हैं, वे अपराधी नहीं, सिर्फ जीने की कोशिश कर रहे हैं। सौरभ की मां अस्पताल में बस यही कहती रही मेरा बेटा चोर नहीं था, वो तो बस थोड़ा रोजगार ढूंढने गया था – क्या वो गलती थी? इस सवाल का जवाब आज तक किसी के पास नहीं है।

सीएलडब्लू जल्द ध्वस्त करेगी इलाके में स्थित अनाधिकृत क्लब

चित्तरंजन: चित्तरंजन रेलवे शहर में ध्वस्तीकरण का दौर एक बार फिर तेज हो गया है। रेलवे अधिकारियों ने शहर के मध्य में स्थित 16 क्लबों को ध्वस्त करने के लिए अंतिम आदेश जारी कर दिए हैं, जिससे स्थानीय निवासियों और मजदूर संगठनों में गहरी चिंता और आक्रोश है। रेलवे द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार, यह अभियान 18 नवंबर को चलाया जाएगा। अधिकारियों ने बीते 1 एवं 8 नवंबर को अंतिम अधिसूचना प्रकाशित करते हुए इन अनधिकृत संरचनाओं को स्वयं हटाने का अवसर दिया है। नोटिस में स्पष्ट कहा गया है कि यदि 18 नवंबर से पहले इन्हें नहीं हटाया जाता है, तो रेलवे कानूनी उपायों और इंजीनियरिंग विभाग की मदद से इन क्लब हाउसों को ध्वस्त कर देगा। ध्वस्त किए जाने वाले क्लब हाउसों पर नोटिस भी चिपका दिए गए हैं। वही मजदूर संगठनों ने मामले का विरोध किया है। सीएलडब्लू श्रमिक संगठन अध्यक्ष राजीव गुप्ता ने आरोप लगाया कि ₹चित्तरंजन को सुनियोजित तरीके से उजाड़ा जा रहा है।₹ उन्होंने जोर दिया कि ये क्लब लंबे समय से सामाजिक जिम्मेदारियों और सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र रहे हैं, जो क्षेत्र के लोगों में आपसी संवाद और सद्भाव बनाए रखते हैं। उन्होंने बताया कि पीएनएम की बैठक में इन्हें न तोड़ने का एजेंडा रखा गया था, लेकिन महाप्रबंधक ने इस मामले को रेलवे बोर्ड के निर्णय पर टाल दिया। आईएनटीयू नेता इंद्रजीत सिंह ने कहा कि रेलवे कर्मचारी इन क्लबों में खेलकूद, किताबें पढ़ने और मेल-जोल के लिए जाते हैं। उन्होंने कहा, ₹अब रेलवे उन सभी अवसरों को भी खत्म कर रहा है।दूसरी तरफ बीते कई महीनों में अनधिकृत निर्माण पर रेलवे की कार्यवाही ने साफ कर दिया है कि शहर में कोई भी अनधिकृत निर्माण नही रहने दिया जायेगा।

कुल्टी ट्रैफिक पुलिस की कार्रवाई, 20 टोटो वाहन जब्त

टोटो का किया जाएगा रजिस्ट्रेशन, नियम तोड़ने पर होगी सजा

आसनसोल। आसनसोल-दुर्गापुर पुलिस कमिश्नरेट के अंतर्गत कुल्टी ट्रैफिक पुलिस की ओर से एक विशेष अभियान चलाया गया, जिसमें कुल्टी के जीटी रोड से करीब 20 टोटो वाहनों को जब्त किया गया।इस संबंध में कुल्टी ट्रैफिक गार्ड के ओसी असीम कुमार दे ने बताया कि बिना रजिस्ट्रेशन चल रहे टोटो वाहनों को फिलहाल जब्त किया गया है। उन पर अभी जुमार्ना नहीं लगाया जाएगा, लेकिन उन्हें जल्द से जल्द अपने वाहन का रजिस्ट्रेशन कराना होगा। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि आगे बिना रजिस्ट्रेशन के टोटो चलते पाए गए, तो संबंधित चालकों और मालिकों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी और नियमों के तहत सजा भी दी जाएगी।

मिठाई के बहाने सियासी गर्मी: डामरा में विधायिका अग्निमित्रा पाल से जनता के तीखे सवाल

तृणमूल-बीजेपी में जुबानी जंग तेज

क्या चुनाव से पहले ही याद आई जनता?

स्थानीयों ने सवालों की लगा दी झड़िया

मैं कई बार इस इलाके में आ चुकी हूं : पाल

आसनसोल। आसनसोल नगर निगम के वार्ड संख्या 87 के डामरा इलाके में मंगलवार को एक अनोखा सियासी नजारा देखने को मिला। दक्षिण आसनसोल की विधायक अग्निमित्रा पाल जैसे ही इलाके में पहुंचीं, आसपास के लोग जमा हो गए। कोई हाथ में मिठाई लेकर आगे बढ़ा, तो कोई सवालों की झड़ी लगा दी।कुछ युवकों ने मिठाई पेश करते हुए पूछा –दीदी, पहले तो आपको यहां कभी नहीं देखा! आपका दफ्तर कहां है? क्या चुनाव से पहले ही याद आई जनता?थोड़ी असहज होने के बावजूद, अग्निमित्रा पाल ने संयम से जवाब दिया। मैं कई बार इस इलाके में आ चुकी हूं। हमारे कार्यकर्ता लगातार जनता के बीच काम कर रहे हैं। मेरे कार्यालय का पता सबको पता है।थोड़ी बातचीत के बाद विधायक वहां से रवाना हो गईं। लेकिन कुछ मिठाई और कुछ सवालों से शुरू हुई यह मुलाकात अब सियासी बहस का विषय बन गई है।तृणमूल कांग्रेस के पश्चिम बर्दवान जिला अध्यक्ष नरेंद्रनाथ चक्रवर्ती ने तंज कसते हुए कहा की सिर्फ अग्निमित्रा पाल ही नहीं, कुल्टी के विधायक अजय पोद्दार को भी लोग खोज रहे हैं। जनता अब मिठाई खिलाकर उन्हें मीठी बातें सुनाना चाहती है।वहीं पलटवार करते हुए अग्निमित्रा पाल ने कहा की तृणमूल कांग्रेस हर समय हमला करती है। शुभेंदु अधिकारी, सुकांत मजूमदार से लेकर मुझ तक किसी को नहीं छोड़ती। हमारे कार्यकताओं पर भी हमले किए जाते हैं। फिर भी भाजपा जनता के लिए लड़ाई जारी रखेगी।अब पूरे राजनीतिक गलियारों में चर्चा का विषय बन गया है। लोगों के सवाल, मिठाई की पेशकश और नेताओं के बयान सबने मिलकर आसनसोल की राजनीति में नया स्वाद घोल दिया है। मिठाई की मिठास अब राजनीति की कड़वाहट में घुलती नजर आ रही है।

बंगाल की धरती पर उड़ा बिहार की जीत का भगवा गुलाल

आतीसबाजियों के साथ जमकर बंटी मिठाइयां

बिहार मे जीत बंगाल मे खुशी ढोल और नगाड़े की धुन पर जम कर थिरके भाजपा नेता और कर्मी

आसनसोल। बिहार मे भाजपा की जीत के बाद बंगाल मे भाजपा कर्मियों ने जमकर खुशी मनाई है, पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता से लेकर राज्य के तमाम जिलों मे भाजपा कर्मी सड़क पर उतरे और भाजपा की बिहार जीत की खुशी अपने - अपने तरीके से मनाई, जिसकी झलक आसनसोल मे भी देखने को मिली जहाँ भाजपा नेताओं ने सड़क पर उतर कर ढोल और नगाड़े की धून पर जमकर नाचते दिखे, इसके अलावा उन्होंने जमकर आरतीशबाजी तो की ही साथ मे लोगों के बिच लड्डू भी बांटे, इसके अलावा भगवा गुलाल की होली भी खेली, इस दौरान भाजपा नेता कृषनेन्दु मुखर्जी ने कहा की बिहार के बाद अब बंगाल की बारी है, बंगाल मे भी भाजपा 2026 मे सरकार बनाएगी और यहाँ इससे भी ज्यादा भव्य तरीके से हमारे कर्मी जश्न मनाएँगे ,

नियामतपुर में अवैध रूप से तालाब पाटकर निर्माण, कुल्टी बीएलआरओ को कांग्रेस का ज्ञापन

आंदोलन की चेतावनी

नियामतपुर। कुल्टी विधानसभा क्षेत्र के नियामतपुर इलाके में एक प्राचीन तालाब को अवैध रूप से पाटकर निर्माण कार्य किए जाने को लेकर विवाद तेज हो गया है। कुमरडिहा मौजा के दाग संख्या 272 पर स्थित इस तालाब को कुछ स्थानीय व्यवसायियों द्वारा मिट्टी भराई कर बिल्डिंग बनाने का प्रयास किए जाने का आरोप है। इस घटना को लेकर कुल्टी इछफ्ड कार्यालय में पहले ही लिखित शिकायत दर्ज की गई है।पिछले कुछ दिनों से इस मुद्दे पर राजनीतिक हलकों में भी गर्माहट बढ़ी है। आसनसोल नगर निगम के अधिकारी भी घटनास्थल का निरीक्षण कर चुके हैं। इसी प्रकरण पर शुक्रवार को कुल्टी ब्लॉक कांग्रेस की ओर से कुल्टी बीएलआरओ को एक ज्ञापन सौंपा गया।इस दौरान कुल्टी ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष सुकांत दास ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा,जहां राज्य सरकार तालाबों को संरक्षण करने का भरपूर प्रयास कर रही है, उसी समय कुल्टी के नियामतपुर इलाके में एक तालाब की अवैध तरीके से भराई कर उस पर कुछ व्यवसाय वर्ग बिल्डिंग बनाने का प्रयास कर रहे हैं। इसी के खिलाफ शुक्रवार को कुल्टी के बीएलआरओ को ज्ञापन दिया है और कहा गया है कि जल्द से जल्द इस पर प्रशासन कार्रवाई करे, नहीं तो इसके बाद कांग्रेस एक बड़ा आंदोलन करेगी।कांग्रेस ने स्पष्ट किया है कि तालाब संरक्षण के मुद्दे पर किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी और जरूरत पड़ने पर बड़े पैमाने पर जनांदोलन खड़ा किया जाएगा।

रानीगंज में भयावह सड़क दुर्घटना, तीन घायल

ट्रेलर की टक्कर से छोटी कार क्षतिग्रस्त

रानीगंज। रानीगंज के रानीसायर मोड़ पर भयावह सड़क दुर्घटना हुई। एक छोटी कार में सवार तीन लोग 19 नंबर राष्ट्रीय राजमार्ग से आसनसोल से दुगार्पुर की ओर जा रहे थे, तभी पीछे से आ रहे एक ट्रेलर ने कार को जोरदार टक्कर मार दी।कार में सवार तीनों लोगों को स्थानीय लोगों ने बचाकर अस्पताल पहुंचाया। दुर्घटना के कारण राष्ट्रीय राजमार्ग पर दुगार्पुर की ओर जाने वाला रास्ता कुछ समय के लिए बंद हो गया। बाद में पुलिस मौके पर पहुंची और दुर्घटनाग्रस्त कार तथा ट्रेलर को हटाकर यातायात को सामान्य किया।स्थानीय लोगों ने बताया कि एक डंपर सड़क पर मोड़ ले रहा था। उसी समय छोटी कार धीरे चल रही थी, तभी पीछे से आ रहे ट्रेलर ने कार को टक्कर मार दी। हालांकि कार में सवार लोग मामूली रूप से घायल हुए।

कम्युनिटी हॉल में भ्रष्टाचार का आरोप

पार्षद सी.के. रेशमा की गिरफ्तारी की मांग पर कांग्रेस का प्रदर्शन

आसनसोल। आसनसोल नगर निगम के 23 नंबर वार्ड की पार्षद सी.के. रेशमा के खिलाफ कम्युनिटी हॉल को लेकर भ्रष्टाचार के आरोप लगाते हुए राष्ट्रीय कांग्रेस ने शनिवार को जोरदार विरोध प्रदर्शन किया।यह प्रदर्शन आसनसोल उत्तर थाना के सामने राष्ट्रीय कांग्रेस की ओर से किया गया। इस दौरान कांग्रेस नेताओं ने पार्षद सी.के. रेशमा की गिरफ्तारी की मांग की।कांग्रेस नेता साहा आलम ने आरोप लगाया कि आसनसोल नगर निगम में पार्षद के खिलाफ लिखित शिकायत दर्ज कराने के बावजूद अब तक उन्हें गिरफ्तार क्यों नहीं किया गया है। उन्होंने सवाल उठाया कि आखिर किस तरह पार्षद सी.के. रेशमा ने अब तक कम्युनिटी हॉल को नगर निगम को हस्तांतरित नहीं किया है और अब भी उस हॉल को किराए पर दे रही हैं। प्रदर्शनकारियों ने चेतावनी दी कि यदि शीघ्र कार्रवाई नहीं की गई तो आंदोलन को और तेज किया जाएगा।

आसनसोल में रेलवे का अवैध कब्जा हटाओ अभियान

महुआ डांगा क्षेत्र में मचा हड़कंप

आसनसोल। आसनसोल नगर निगम के वार्ड नंबर 24 के महुआ डांगा इलाके में रेलवे प्रशासन की ओर से अवैध दखलदारी हटाव अभियान चलाया गया। रेलवे के इस अभियान के तहत उन सभी लोगों को हटाया गया जो रेलवे क्वार्टरों में अवैध रूप से रह रहे थे या दुकान बनाकर कब्जा किए हुए थे।अभियान के दौरान रेलवे अधिकारियों के साथ सुरक्षा बल भी मौजूद रहे। कार्रवाई के चलते इलाके में अफरा-तफरी और हड़कंप का माहौल देखा गया। कई लोगों ने इस कार्रवाई का विरोध भी जताया, लेकिन रेलवे प्रशासन ने स्पष्ट किया कि यह अभियान सरकारी संपत्ति को अवैध कब्जे से मुक्त कराने के लिए आवश्यक था।

सालानपुर में जिला शासक और मेयर ने 'आमादेर पाड़ाये' से होने वाले विकास कार्यों का किया शिलान्यास

सालानपुर। पश्चिम बंगाल सरकार की महत्वाकांक्षी परियोजना 'आमार पाड़ाय आमार समाधान' के माध्यम से रूपनारायणपुर ग्रामपंचायत अंतर्गत रूपनागर में 2 लाख 15 की लागत से निर्माण होने वाली बड़े ड्रेनेज के कार्य का शिलान्यास मंगलवार सुबह जिला शाशक एस पोन्नाम्बलम एवं आसनसोल नगर निगम मेयर सह बाराबनी विधायक बिधान उपाध्याय ने किया। इसके साथ ही सालानपुर ब्लॉक के 114 बूथों पर विकास कार्यों शुरू हो गया। प्रखंड में 11.40 करोड़ की लागत से 114 बूथों पर विकास कार्य किया जायेगा। जिसके तहत प्रत्येक बूथ पर 10 लाख रुपये आवंटित किए जाएंगे। प्रखंड बीडीओ ने बताया कि परियोजना के लिए 8 करोड़ 70 लाख की धनराशि पहले ही प्राप्त हो चुकी है। कुल 650 टेंडर निकाली गई है जिसमें से करीब 340 कार्य को शुरू करने का आदेश मिल गया है। और 100 कार्य शुरू हो गया है।मौके पर जिला शाशक एस पोन्नाम्बलम परियोजना का मुख्य उद्देश्य, लोगों के घर तक सेवा पहुंचाना ही उद्देश्य है। इस दौरान प्रखंड बीडीओ देबंजन बिस्वास पंचायत समिति अध्यक्ष कैलाशपति मंडल, उपाध्यक्ष विद्युत मिश्रा, समाजसेवी भोला सिंह समेत अन्य मौजूद थे।

सिमुलिया तालाब कम्युनिटी सेंटर भूमि विवाद पर फर्जीवाड़े के आरोप

आसनसोल। आसनसोल नॉर्थ थाना क्षेत्र के बाबू तालाव के पास स्थित सिमुलिया तालाब कम्युनिटी सेंटर की जमीन को लेकर फजीर्वाड़े के गंभीर आरोप सामने आए हैं। इस पूरे प्रकरण ने आसनसोल नगर निगम प्रशासन को कटघरे में खड़ा कर दिया है।पश्चिम बर्दवान जिला मीम नेता ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस कर इस मामले पर कई सवाल उठाए हैं। उनका कहना है कि आसनसोल नगर निगम द्वारा वार्ड संख्या 26 में सिमुलिया तालाब के पास कम्युनिटी सेंटर निर्माण के लिए करीब दो वर्ष पूर्व बोर्ड लगाया गया था और नारियल फोड़कर शिलान्यास भी किया गया था। लेकिन दो साल बीत जाने के बाद भी वहां किसी तरह का कम्युनिटी हॉल का निर्माण कार्य शुरू नहीं हुआ।दानिश अजीज मीम नेता का आरोप है कि वर्तमान में उसी स्थान पर किसी प्रकार का निर्माण कार्य जरूर चल रहा है, पर यह स्पष्ट नहीं है कि यह कार्य किसके द्वारा और किस अनुमति के तहत किया जा रहा है। उन्होंने प्रशासन से मांग की कि पूरे मामले की सच्चाई को सार्वजनिक किया जाए, ताकि जनता को वास्तविक जानकारी मिल सके।सूत्रों के अनुसार, यह आशंका जताई जा रही है कि कुछ प्रमोटर उस भूमि पर कब्जा करने की कोशिश कर रहे हैं। इस मुद्दे को लेकर स्थानीय लोगों में नाराजगी देखी जा रही है, और वे भी प्रशासन से निष्पक्ष एवं पारदर्शी जांच की मांग कर रहे हैं।

मित्रता में श्रीराम संग निषादराज की उदारता का कोई सानी नहीं

गोविन्द अग्रवाल

सदियों बाद भी मित्रता की कसौटी पर प्रभु श्रीराम के प्रति निषादराज की उदारता उतनी ही प्रासंगिक है, जितनी द्वारकाधीश योगेश्वर श्रीकृष्ण की बालसखा सुदामा के प्रति रही।

रामायण में निषादराज (गुह्य) और श्रीराम के प्रसंग में निषादराज का श्रीराम से पहला परिचय वनवास के दौरान गंगातट पर होता है, जहां वे श्रीराम को गंगा पार करवाने की पेशकश करते हैं। इसके बाद भरत के अयोध्या लौटने पर निषादराज भरत की मुलाकात श्रीराम से कराते हुए दोनों के बीच प्रेम और भक्ति को देखकर भावुक हो जाते हैं। यह विरल मित्रता और भक्ति का एक महत्वपूर्ण प्रसंग है, जिसमें निषादराज का श्रीराम के प्रति समर्पण और उनके परिवार के साथ उनका अटूट संबंध दिखता है।

श्रीराम और निषादराज का पहला प्रसंग: वनगमन के दौरान श्रीराम गंगा नदी के किनारे श्रृंगवेरपुर नामक स्थान पर पहुंचते हैं।

निषादराज की भेंट: निषादराज गुह्य, जो श्रीराम के बालसखा थे, उनसे मिलने पहुंचते हैं।

गंगा पार कराना: निषादराज श्रीराम को गंगा पार कराने की सेवा स्वीकार करते हैं।

सेवा और समर्पण: वे श्रीराम के चरण पखार कर ही नाव पर बैठने के लिए कहते हैं, जो कि श्रीराम के प्रति उनकी भक्ति और सम्मान को दर्शाता है।

श्रीराम को राज्य देने का प्रस्ताव : निषादराज अपनी प्रजा और राज्य को श्रीराम के चरणों में समर्पित करते हैं, लेकिन श्रीराम उनकी सेवा स्वीकार करते हुए आगे बढ़ जाते हैं।

भरत और निषादराज का प्रसंग: भरत जब श्रीराम को मनाने चित्रकूट जाते हैं, तो उनका सामना निषादराज से होता है।

शुरुआती भ्रांति : पहले तो निषादराज भरत को श्रीराम का शत्रु समझते हैं, लेकिन भरत की भक्ति देख उनका हृदय पिघल जाता है।

भक्ति की परीक्षा: निषादराज भरत-प्रेम और श्रीराम के प्रति उनकी भक्ति को देखकर द्रवित जाते हैं।

राम-भरत मिलन : निषादराज भरत को श्रीराम के पास ले जाते हैं, जहां भरत-राम मिलन होता है।

यह संपूर्ण प्रसंग श्रीराम और निषादराज के बीच निष्काम भक्ति और आपसी मर्यादा को उजागर करता है। यह श्रीराम की करुणा, निषादराज की निष्ठा और भरत की भक्ति का एक अनूठा संगम है, जो रामायण के सबसे महत्वपूर्ण अध्यायों में से एक है। वनगमन के मार्ग में जब निषादराज से श्रीराम की भेंट होती है, तो मर्यादापुरुषोत्तम की मनाही के बावजूद कुश बिछा कर उनके साथ ही जनकनंदिनी जानकी और लक्ष्मण के समुचित विश्राम की व्यवस्था करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। इतना ही नहीं, तुलसी के राम को पदप्रक्षालन के बाद ही निषादराज ने केवट के जरिये नदिया पार करवाने की शर्त रख दी थी। जिसे न चाहते हुए भी वनवासी राम को स्वीकार करना पड़ा था। क्योंकि निषादराज की उदारता-सदाशयता पर रघुवीर स्वयं ही रीझ गये थे। जहां श्रीराम-निषादराज का मिलन हुआ,शृंगवेरपुर ही वह पावन भूमि है, जहां के नरेश निषादराज गुह्य से वनगमन की यात्रा में श्रीराम की प्रगाढ़ मैत्री हो गयी थी। इसलिए यहां के घाट केवल पत्थरों से बनी सीढ़ियां न होकर आस्था और बंधुत्व की अनूठी मिसाल है, जो कालक्रम के अमिट साक्ष्य बन यथावत अपनी गाथा कह रहे हैं। श्रीराम के चरणचिह्नों की मधुर स्मृति से निषादराज की उदारता तक, यहां हर घाट भावनाओं के साथ ही पौराणिकता की जीवंत विरासत है।

केंद्र और प्रदेश सरकार की ओर से इन विरासतों को सहेजने का नया अध्याय लिखे जाने की तैयारी इस पवित्र धाम को एक बार फिर सांस्कृतिक पुनर्जागरण की दहलीज़ पर ला खड़ा कर चुकी है। गंगातट का यह शांति-विलसित वातावरण आज भी श्रद्धालुओं को कालखंड से परे ले जाकर त्रेता की उस अनुपमेय अनुभूति से जोड़ देता है। जरूरी है घाटों का विकास और संरक्षण शृंगवेरपुर के घाटों के अपेक्षित संरक्षण से यह पौराणिक स्थल पुनः सांस्कृतिक पर्यटन का प्रमुख केंद्र बन जायेगा। 35 वर्षों से अखंड संकीर्तन बना आस्था का संगम यहां विगत 35 सालों से जय राम, जय जय राम के जयकारे सहित अखंड संकीर्तन अनवरत चला आ रहा है। लेकिन घाट अवहेलित हैं। जबकि यहां के सुख्यात बजरंगबली मंदिर में मन्नतें पूरी होने से श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है। फिर भी स्थानीय प्रशासन उदासीन है।

सात्विक, सुपाच्य और आरोग्यकारक है गाय का दूध

डा.अरविंद सेठ

गाय की महिमा का वर्णन हमारे सभी शास्त्रों में किया गया है, गाय का दूध अमृत है। गाय का दूध सात्विक, सुपाच्य और आरोग्यकारक है। जन्मदात्री माता को छोड़कर दूसरे स्थान पर गोमाता का ही दूध माना जाता है। गाय के दूध में कॉलेस्ट्रोल को बढ़ाने वाले तत्त्व नहीं पाए जाते, इससे बना घी भी सुपाच्य होता है और गाय के दूध एवं मक्खन में जीवनीय शक्ति भी भरपूर रूप में पाई जाती है। केवल दूध के कल्प द्वारा ही अनेक रोगों का शमन एवं उनको नियन्त्रित किया जा सकता है। गाय ही एक ऐसा पशु है जिसे माता के नाम से पुकारा जाता है। दूध देने वाले पशु तो दूसरे भी हैं, जैसे-भैंस, बकरी, ऊंटनी आदि लेकिन उनमें से किसी को भी भैंस माता या बकरी माता नहीं कहा जाता है। इससे सिद्ध होता है कि गाय की कितनी उपयोगिता है। वेदों में भी कहा गया है-''गावो विश्वस्य मातरः''। अर्थात् गाय विश्व की माता है। इसलिए गाय के दूध को सर्वोत्तम माना गया है। गाय के दूध का कल्प करने से निम्न रोगों से छुटकारा मिल जाता है- (1) जीर्ण ज्वर अर्थात् बहुत समय से आ रहा बुखार। (2) सिर एवं नेत्रों के रोग। (3) गण्डमाला, अग्निमांद्य, तिल्ली, यकृत, जलोदर, अम्लपित्त, पेटशूल तथा संग्रहणी आदि। (4) रक्तविकार, वात रक्त। (5) अपस्मार, उन्माद, मूर्च्छा, चक्कर आना। (6) विष और उससे सभी प्रकार के होने वाले विकार।(7) लकवा। (8) मूत्राशय के रोग। (9) पाण्डु (पीलिया)। (10) रक्तपित्त। (11) प्यास लगना। (12) औषधियों की ऊष्णता। (13) मानसिक विकार तथा स्मरणशक्ति का ह्रास आदि। दूध के कल्प के साथ-साथ योगाभ्यास एवं प्राणायाम भी करना चाहिए, ऐसा करने से रोग शीघ्रता से दूर हो जाते हैं और आरोग्य प्राप्त होता है।

छाछ (मट्ठा): शरीर के लिए वरदान

छाछ बनाने की विधि : अच्छी प्रकार से दूध को गर्म करने के बाद, जिस समय दूध की गर्मी कम हो जाए, दूध में जामन डालकर उसको दही बनाने के लिए ढककर रख देना चाहिए। प्रातःकाल उसमें चौथाई भाग पानी मिलाकर मथानी से उसको अच्छी प्रकार मथकर उसका मक्खन निकाल लें। इस प्रकार से तैयार हुई छाछ अत्यन्त रुचिकर, सुपाच्य, मल-मूल को साफ करने वाली तथा अन्य द्रव्यों को भी पचाने वाली होती है। इसी कारण इसका प्रयोग अतिसार, संग्रहणी, अर्श, नलाश्रित वायु, पीलिया, उदरशूल, मूत्रकष्ट, हैजा, मूत्राघात, अश्मरी तथा गुल्म आदि विकारों में किया जाता है।

गुण :(1) शीतकाल में तथा अग्निमांद्य, अरुचि, वातरोग, स्रोतोरोध आदि रोगों में सोंठ-पीपल के साथ लेने से यह अमृत के समान लाभ करती है। (2) यह विष-विकार का नाश करती है।(3) यह क्षुधावर्धक है।(4) यह नेत्र रोगनाशक है। (5) रक्त एवं मांस की वृद्धि करती है।(6) आंव व कफ-वात नाशक है।(7) नेत्र रोगों में लाभप्रद है।(8) ज्वर रोग नाशक है। (9) छर्दि, लालासाव, अतिसार, शूल, तिल्ली, उदर व अरुचि को दूर करती है। (10) श्वि (कुष्ठ) रोग, कोष्ठगत रोग व सूजन में लाभदायक है।

रोगानुसार छाछ (मट्ठे) का प्रयोग: (1) वात विकार में सैंधा नमक के साथ प्रयोग करें। (2) पित्त विकार में शक्कर मिलाकर प्रयोग करें। (3) कफ विकार में सोंठ, सैंधव नमक, काली मिर्च व पीपल ये सभी मिलाकर पीना चाहिए। (4) मूत्रकृच्छ में गुड़ के साथ प्रयोग करें। (5) पाण्डु रोग में चित्रक चूर्ण के साथ लें। (6) उदर विकार में- (अ) वातोदर में पीपल व सैंधव नमक के साथ दें। (ब) पित्तोदर में शक्कर तथा काली मिर्च मिलाकर दें। (स) कफोदर में अजवायन, सैंधव नमक, जीरा, सोंठ, पीपल व काली मिर्च के साथ दें। (द) सन्निपातोदर में सोंठ, काली मिर्च, पीपल और सैंधव नमक मिलाकर सेवन करें। (य) बद्धोदर में हाउबेर, अजवायन, जीरा और सैंधव नमक मिलाकर दें।

अजब-गजब

जहां लोग अपने घरों में ताला नहीं लगाते

स्विट्ज़रलैंड और ऑस्ट्रिया के बीच बसा छोटा सा देश लिकटेंस्टीन

निज संवाददाता : लिकटेंस्टीन न तो अपनी कोई मुद्रा छापता है, न ही इसके पास कोई अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट है, फिर भी यह दुनिया के सबसे समृद्ध और सुरक्षित देशों में से एक है। लिकटेंस्टीन भौगोलिक रूप से छोटा देश है, लेकिन आर्थिक दृष्टि से यह दुनिया की सबसे स्थिर अर्थव्यवस्थाओं में गिना जाता है। इसकी चतुर आर्थिक नीतियां इसकी सफलता की सबसे बड़ी वजह हैं। अपनी राष्ट्रीय मुद्रा छापने के बजाय इसने पड़ोसी देश स्विट्ज़रलैंड की मुद्रा 'स्विस फ्रैंक' को अपनाया है। इस फैसले ने देश को स्थिरता दी और केंद्रीय बैंक चलाने या मुद्रास्फीति नियंत्रण जैसी जटिल प्रक्रियाओं पर संसाधन खर्च करने की जरूरत नहीं रही। इस आर्थिक मॉडल ने लिकटेंस्टीन को न केवल महंगाई से बचाया बल्कि वित्तीय प्रबंधन में भी मजबूती दी। दिलचस्प बात यह है कि इस देश में कोई अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट नहीं है।इसके बावजूद यात्रियों को किसी प्रकार की असुविधा नहीं होती, क्योंकि स्विट्ज़रलैंड और ऑस्ट्रिया के आधुनिक हवाई अड्डे इसकी परिवहन आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। लोग ट्रेन या कार से आसानी से इन देशों के एयरपोर्ट तक पहुंच जाते हैं।सड़कों का नेटवर्क इतना अच्छा है कि आने-जाने में बिल्कुल परेशानी नहीं होती। लिकटेंस्टीन की असली ताकत इसका मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर है। यह देश उच्च गुणवत्ता वाले औद्योगिक उपकरणों और हाई-टेक प्रोडक्ट्स के निर्माण के लिए प्रसिद्ध है। यहां बनाए जाने वाले पुर्जे और मशीनें दंत चिकित्सा, ऑटोमोबाइल, और यहां तक कि अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी तक में उपयोग की जाती हैं। हिल्टी जैसी वैश्विक कंपनी इसी देश से संचालित होती है। यहां नागरिकों से ज्यादा पंजीकृत कंपनियां हैं, जसके कारण रोजगार के अवसर प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। यह देश केवल आर्थिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सुरक्षा के मामले में भी मिसाल है। यहां अपराध दर लगभग शून्य है। कई रिपोर्टों के अनुसार, यहां अपराध की घटनाएं इतनी कम हैं कि स्थानीय लोग अपने घरों के दरवाजों पर ताला लगाना भी जरूरी नहीं समझते। इसका कारण है छोटा जनसमूह, सख्त प्रशासन और लोगों में कानून के प्रति गहरा सम्मान। लिकटेंस्टीन इस बात का जीवंत उदाहरण है कि किसी देश के विकास के लिए विशाल भूभाग या प्राकृतिक संसाधनों की नहीं, बल्कि समझदारीपूर्ण नीतियों और अनुशासित समाज की आवश्यकता होती है। बिना एयरपोर्ट और अपनी मुद्रा के भी यह देश साबित करता है कि ''छोटा देश, बड़ी सोच'' ही असली विकास की पहचान है। बता दें कि जब किसी देश के विकास की बात होती है, तो आमतौर पर बड़े भूभाग, विशाल सेना, मजबूत राष्ट्रीय मुद्रा और बड़े एयरपोर्ट जैसे मानकों को प्रमुखता दी जाती है, लेकिन इस छोटे से देश में ऐसा नहीं है।

शादी के 9 साल बाद शख़्स ने दोस्त से कराई पत्नी की शादी

कहा-अब मैं आजाद हूं

निज संवाददाता : राज्य के बीरभूम से एक अनोखा व हैरान करने वाला मामला सामने आया है। यहां एक युवक ने अपने नौ साल के पुरान रिश्ते को समाप्त कर लिया और इसके बाद उसने अपनी पत्नी की शादी अपने दोस्त से करा दी।

इस आनोखी शादी के बारे में जब लोगों को जानकारी हुई तो इसे देखने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। मामला जिले के सांइथिया के वार्ड नंबर आठ का है। यहां के रहने वाले बापी मंडल की शादी बीरभूम के तारापीठ की पंचमी मंडल से करीब नौ साल पहले हुई थी। इन दोनों का एक सात साल का बच्चा भी है। हालांकि शादी के बाद से ही इन दोनों में कलह शुरू हो गई थी, जिसके बाद महिला ने अपने पति बापी के खिलाफ मामला भी दर्ज कराया था।इसके बाद मामला कोर्ट में पहुंचा। उसके बाद ही महिला अपने पिता के घर चली गई और उसका बेटा अपने पिता के साथ रहने लगा था। इस बीच महिला का अपने दोस्त जीतकुमार मिर्धा से नजदीकियां बढ़ने लग गईं और धीरे-धीरे यह नजदीकियां प्यार में बदल गई। जीत का घर सांइथिया के वार्ड नंबर 16 में है। उनके प्रेम संबंधों का पता चलने के बाद दोनों परिवारों में कलह शुरू हो गई।

इन सबकी जानकारी जब बापी को हुई तो, वह एक दिन सुबह अचानक अपनी पत्नी और दोस्त के साथ सांइथिया के नंदिकेशरी सतीपीठ मंदिर पहुंचा। यहां उसने दोनों की शादी करा दी। जब महिला के पति ने उन दोनों की शादी करा दी तो महिला ने अपने पति के खिलाफ किये गए केस को वापस ले लिया। इस दौरान बापी ने नए शादीशुदा जोड़े के सामने खड़े होकर कहा कि अब मैं आजाद हूं। मेरी बीबी अब मेरे दोस्त की पत्नी है। अब से मेरा दोस्त ही उसके गुजारे का इंतजाम करेगा। साथ ही उसने बताया कि पत्नी ने वादा किया था कि अगर वो दोस्त से शादी उससे कारा देगा तो वो केस वापस ले लगी।

चायवाले की भावुक कहानी

- 4 साल में गुल्लक में जोड़े एक लाख रुपए
- खुद के सपने त्याग बेटी को दिया स्कूटी का उपहार

निज संवाददाता : छोटी-छोटी बचत भी, जब बड़े सपनों से प्रेरित हो, तो असंभव को भी संभव बना सकती है। इसकी मिसाल देखने को मिली पश्चिम मेदिनीपुर के एक गांव में, जहां एक चाय वाले ने अपनी बेटी का सपना पूरा करने के लिए छोटी बचत करके एक लाख रुपए जमा लिए और फिर स्कूटी खरीदकर बेटी की मुराद पूरी की। यानी ग्रामीण बंगाल के एक साधारण चाय विक्रेता ने अपने धैर्य, लगन और प्रेम से कई लोगों को चकित कर दिया।

एक दिन पश्चिमी मेदिनीपुर के चंद्रकोना ब्लॉक के मौला गांव के निवासी बच्चू चौधरी चंद्रकोना कस्बे के गोसाई बाज़ार स्थित एक दोपहिया वाहन शोरूम में स्कूटी लेने पहुंचे। यह स्कूटी वह अपनी बच्ची को तोहफे में देना चाहते थे। शोरूम में मौजूद लोग तब हैरान हो गए, जब बच्चू ने उन्हें 69,000 रुपये के सिक्कों और 31,000 रुपये के नोटों से भरे प्लास्टिक के डिब्बे दिए। यह उनकी चार साल की कड़ी मेहनत और गुल्लक में बचत करके जुटाई कमाई थी।

45 साल के बच्चू ने शोरूम में मौजूद लोगों को बताया कि उन्हें अपने लिए नहीं बल्कि अपनी बेटी के लिए दोपहिया वाहन खरीदना है। उन्होंने बताया कि उनकी बेटी सुषमा का स्कूटी खरीदने का सपना था। उनकी बेटी ने भी इसके लिए गुल्लक में रुपये जुटाए, जो 10,000 रुपये थे। शोरूम के सेल्स एग्जीक्यूटिव ने बताया कि बच्चू ने पहले कीमत पूछी और कहा कि अगर ज़्यादा महंगा हुआ तो वह ईएमआई पर स्कूटर खरीद सकता है। फिर उसने यूं ही पूछा कि क्या हम सिक्के लेते हैं। हम मान गए, लेकिन हमें उसकी बात तब तक समझ नहीं आई जब तक वह डिब्बे लेकर नहीं आया और सिक्के ज़मीन पर नहीं उड़ेल दिए।

शोरूम के सभी कर्मचारी 1 रुपये, 2 रुपये, 5 रुपये और 10 रुपये के सिक्कों और 10, 20, 50 और 100 रुपये के नोटों की भारी संख्या देखकर दंग रह गए। आठ कर्मचारियों को पूरी रकम गिनने में दो घंटे से ज़्यादा का समय लगा। एक अधिकारी ने हंसते हुए कहा कि हमने अपने करियर में ऐसा कभी नहीं देखा। अपने गांव में एक छोटी सी चाय की दुकान चलाने वाले बच्चू ने कहा कि वह हमेशा से मोटरसाइकिल खरीदने का सपना देखते थे। लेकिन गरीबी के सपने सारी उम्र अपने सपनों की बलि देते रहे। लेकिन मेरी बेटी एक स्कूटर चाहती थी। मुझे उसका सपना पूरा करना था। पिता ने अपनी बेटी के बारे में कहा कि उसने खुद 10,000 रुपये बचाए थे, इसलिए मैंने उसे एक स्कूटर उपहार में देने का फैसला किया। यह मेरा भी सपना था, और अब यह पूरा हो गया है। 23 वर्षीय सुषमा को यकीन ही नहीं हो रहा था कि उसके पिता ने उसके लिए क्या किया। उसने बताया कि चार साल पहले, मैंने अपने पिता से कहा था कि मुझे कॉलेज और ट्यूशन जाने के लिए एक स्कूटर चाहिए। उस समय उन्होंने कहा था कि हम एक स्कूटर नहीं खरीद सकते। फिर, एक दिन अचानक उन्होंने मुझसे कहा- चलो, मैं तुम्हारे लिए एक स्कूटर ले आता हूं। जब मैंने पूछा कि उन्हें पैसे कहां से मिले, तो उन्होंने सिक्कों से भरा एक बड़ा डिब्बा उठा लिया। तभी उसे एहसास हुआ कि उसके पिता पिछले चार सालों से इतने सारे सिक्के क्यों जमा कर रहे थे। उसने कहा कि यह बहुत ही अद्भुत एहसास है, मैं इसे कभी नहीं भूलूंगी।

स्कूटर की कीमत 110,000 रुपये थी। पिता ने एक लाख रुपये दिए और बेटी ने बाकी पैसे दिए। दोनों ने सिक्कों से भरे कंटेनरों को एक टोटो में घर से लगभग 15 किलोमीटर दूर शोरूम तक पहुंचाया। गर्व से भरी सुषमा ने कहा कि कोई कर्ज़ नहीं, कोई ईएमआई नहीं। हमने पूरा भुगतान किया और उसी दिन स्कूटर घर ले आए।

इधर, जैसे ही यह खबर फैली, स्थानीय लोगों और सोशल मीडिया पर लोगों ने चायवाले की कहानी की सराहना करते हुए इसे एक पिता के धैर्य, कड़ी मेहनत और अपनी बेटी के प्रति प्रेम का एक खूबसूरत उदाहरण बताया।

एक अनोखा बाजार, जहां समान नहीं रिश्ते तलाशे जाते हैं

निज संवाददाता : चीन के शंघाई शहर में एक अनोखा बाजार लगता है जहां आने वाले लोग सामान खरीदने नहीं बल्कि शादी के लिए रिश्ते तलाशने आते हैं। शंघाई स्थित पीपुल्स पार्क में हर शनिवार और रविवार दोपहर का नजारा किसी अनोखे बाजार जैसा होता है। इस ''मैरिज मार्केट'' में सैकड़ों माता-पिता अपने अविवाहित बच्चों के लिए जीवनसाथी की खोज में जुटे रहते हैं। अगर कोई युवक या युवती 30 की उम्र पार कर चुका है और अभी तक अविवाहित है, तो माता-पिता का पहला कदम इसी पार्क की ओर होता है। वे अपने बच्चों की तस्वीरें, उम्र, लंबाई, नौकरी, सैलरी, शौक और अपेक्षाओं जैसी जानकारियां ए4 शीट पर लिखकर छातों या बोर्डों पर टांग देते हैं। यह नज़ारा किसी जॉब फेयर या प्रॉपर्टी एक्सपो जैसा होता है, फर्क सिर्फ इतना है कि यहां सौदा होता है जीवनसाथी का। यह परंपरा 1996 में शुरू हुई थी और इसे चीन की ''वन चाइल्ड पॉलिसी'' का सामाजिक परिणाम माना जाता है। दशकों बाद यह नीति एक असंतुलन छोड़ गई आज चीन में करीब 4 करोड़ पुरुषों की संख्या महिलाओं से अधिक है। वहीं, ''शेंग नू'' यानी 'बची हुई लड़कियों' को समाज में ताने सुनने पड़ते हैं। 2025 में, जब चीन की आबादी लगातार घट रही है और 2024 में 13.9 लाख की कमी दर्ज हुई, तब यह बाजार और भी सक्रिय हो गया। शंघाई के ह्वांगपू जिले में स्थित यह पार्क वीकेंड पर एक खुला वैवाहिक मेला बन जाता है। माता-पिता फोल्डिंग स्टूल पर बैठकर दूसरों को अपने बच्चों की प्रोफाइल दिखाते हैं, मिलते-जुलते परिवारों से बात करते हैं और अगर प्रोफाइल पसंद आ जाए तो संपर्क साझा करते हैं। कई बार वे ''फैमिली डिनर'' भी तय कर लेते हैं बिना अपने बच्चों को बताए। हालांकि, युवा पीढ़ी इस तरह के कदमों को अपनी निजता में दखल मानती है और कई बार इससे नाराज भी हो जाती है। दिलचस्प बात यह है कि अब इस तरह के मैरिज मार्केट सिर्फ शंघाई तक सीमित नहीं हैं। बीजिंग, चेंगदू और ग्वांगझो जैसे बड़े शहरों में भी इसी तरह के पार्क उभरने लगे हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि चीन के युवा अब करियर, बढ़ती महंगाई और महंगे घरों के कारण शादी को प्राथमिकता नहीं दे रहे हैं।

भारतीय महिला क्रिकेट टीम की कप्तान हरमनप्रीत कौर को जादवपुर विश्वविद्यालय प्रदान करेगा डी.लिट

निज संवाददाता : जादवपुर विश्वविद्यालय (जेयू) ने सिफारिश की है कि भारतीय महिला क्रिकेट टीम की कप्तान हरमनप्रीत कौर, जिन्होंने पिछले दिनों भारत को अभूतपूर्व पहला विश्व कप दिलाया, को 24 दिसंबर को पारंपरिक रूप से आयोजित होने वाले अपने वार्षिक दीक्षांत समारोह में डी.लिट (मानद उपाधि) से सम्मानित किया जाए। दीक्षांत समारोह की तैयारियों पर चर्चा के लिए हुई चार डीन समिति की बैठक में इस नाम का प्रस्ताव रखा गया। इसमें कुलपति और कार्यवाहक रजिस्ट्रार भी बैठक में शामिल हुए। जादवपुर विश्वविद्यालय के एक अधिकारी ने बताया कि इस नाम को राज्यपाल सी.वी.आनंद बोस, जो राज्य द्वारा सहायता प्राप्त विश्वविद्यालयों के पदेन कुलाधिपति हैं, के समक्ष अनुमोदन के लिए प्रस्तावित किया जाएगा। अधिकारी ने कहा कि चूंकि हरमनप्रीत के नेतृत्व में हासिल की गई यह उपलब्धि महिला सशक्तिकरण में एक महत्वपूर्ण क्षण है, इसलिए उनके नाम का प्रस्ताव रखा गया। अधिकारी ने कहा-अगर कुलाधिपति अपनी

सहमति देते हैं, तो नाम औपचारिक अनुमोदन के लिए विश्वविद्यालय की कार्यकारी परिषद के समक्ष रखा जाएगा। जेयू हरमनप्रीत को सम्मानित करने में गौरव महसूस करेगा, जिन्होंने हम सभी को गौरवान्वित किया है।जेयू के नए कुलपति चिरंजीव भट्टाचार्य इस मामले पर कुलाधिपति की सहमति के लिए उनसे मिलने का समय मांगेंगे। जेयू के एक अधिकारी ने कहा- बैठक के दौरान, डी.लिट. के लिए प्रस्तावित नाम कुलाधिपति की सहमति के लिए उनके समक्ष रखा जाएगा।

बैठक में दीक्षांत समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में नोबेल पुरस्कार विजेता अभिजीत विनायक बनर्जी, डीआरडीओ के अध्यक्ष समीर वी. कामत और अनुसंधान राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (एएनआरएफ) के सीईओ शिवकुमार कल्याणरमन के नामों का भी प्रस्ताव रखा गया। जेयू के एक अधिकारी ने कहा-ये नाम भी कुलाधिपति की सहमति के लिए उनके समक्ष रखे जाएंगे। बता दें कि पिछले साल, जेयू का दीक्षांत समारोह विवादों में रहा था।

ज्योति सिंह करेंगी भारत की कप्तानी

महिला जूनियर हॉकी विश्व कप 2025 के लिए भारतीय टीम घोषित

निज संवाददाता : हॉकी इंडिया ने बीते सोमवार को आगामी एफआईएच महिला जूनियर हॉकी विश्व कप 2025 के लिए भारतीय जूनियर महिला हॉकी टीम की घोषणा की। यह टूर्नामेंट 1 से 13 दिसंबर तक सैंटियागो, चिली में आयोजित होगा। 18 खिलाड़ियों और 2 वैकल्पिक खिलाड़ियों को मिलाकर बनी यह 20 सदस्यीय टीम अपने कठोर प्रशिक्षण और तैयारी की परीक्षा देने के लिए तैयार है और विश्व मंच पर मजबूत प्रदर्शन करने का लक्ष्य रखेगी। भारत को पूल 'सी' में जर्मनी, आयरलैंड और नामीबिया के साथ रखा गया है। भारतीय टीम का पहला मुकाबला 1 दिसंबर को नामीबिया से होगा, इसके बाद 3 दिसंबर को जर्मनी और 5 दिसंबर को आयरलैंड से खेलेगी। प्रत्येक पूल की शीर्ष टीमें 7 से 13 दिसंबर तक खेले जाने वाले नॉकआउट चरण में प्रवेश करेंगी। टीम की कप्तानी ज्योति सिंह के हाथों में होगी, जबकि तुषार खंडेकर मुख्य कोच के रूप में कार्यरत रहेंगे। गोलकीपर की भूमिका निधि और एंगिल हर्षा रानी मिन्ज निभाएंगी। रक्षा पंक्ति में मनीषा, लालथनलुआलांगी, साक्षी शुक्ला, पूजा साहू और नंदिनी शामिल हैं।मिडफील्ड में साक्षी राणा, इशिका, सुनेलिता टोप्पो, कप्तान ज्योति सिंह, खैदेम शिलैमा चानू और बिनिमा धान पर जिम्मेदारी होगी।

फॉरवर्ड लाइन में सोनम, पूर्णिमा यादव, कनिका सिवाच, हिना बानो और सुखवीर कौर को शामिल किया गया है, जो आक्रमण में तेज धार प्रदान करेंगी। प्रियंका यादव और पार्वती टोप्पो को वैकल्पिक खिलाड़ियों के रूप में नामित किया गया है। टीम चयन पर बोलते हुए मुख्य कोच तुषार खंडेकर ने हॉकी इंडिया की प्रेस विज्ञप्ति में कहा कि मैं इस टीम से बहुत खुश हूं और इस समय उनके खेल के स्तर से बेहद संतुष्ट हूं। मेरा मुख्य सिद्धांत हॉकी में अनुशासन है, और इसी को ध्यान में रखते हुए यह टीम बनाई गई है। हमने कठिन प्रशिक्षण चरण से गुजरते हुए अपनी रक्षात्मक संरचना और विपक्षी क्षेत्र में फिनिशिंग पर बहुत मेहनत की है। इन पिछले कुछ महीनों में लड़कियों ने उल्लेखनीय सुधार और परिपक्वता दिखाई है। टीम की मानसिकता पर उन्होंने कहा कि हम सभी तैयार हैं और चिली यात्रा को लेकर बेहद उत्साहित हैं। लड़कियां पूरी तरह प्रेरित हैं और विश्व कप में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए तत्पर हैं।

काशी: जहां साक्षात बसते हैं भगवान शिव

निज संवाददाता : काशी को भगवान शिव की नगरी माना जाता है, जहां श्री काशी विश्वनाथ मंदिर स्थित है, जो भारत के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है। हिंदू मान्यताओं के अनुसार, यहां जीवन के अंत में मोक्ष की प्राप्ति होती है, और गंगा नदी में स्नान करने से भी पुण्य मिलता है। पुराणों के अनुसार काशी आद्य वैष्णव स्थान है। पहले यह भगवान विष्णु (माधव) की पुरी थी। महादेव को काशी इतनी अच्छी लगी कि उन्होंने इस पावन पुरी को विष्णुजी से अपने नित्य आवास के लिए मांग लिया। तब से काशी उनका निवास-स्थान बन गया। प्रयागराज और शिव का गहरा संबंध है, जहां कई पौराणिक और ऐतिहासिक शिव मंदिर हैं। इनमें मनकामेश्वर मंदिर (जहां कामदेव को भस्म किया गया था), शिवकुटी (जहां शिव कचहरी लगती है) और सुजावन देव मंदिर (जहां शिव और यमुना का मंदिर है) प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त, यहां कई अनूठे मंदिर जैसे नाथेश्वर नाथ महादेव मंदिर भी हैं, जहां भक्त मन्नत पूरी होने पर ताले लगाते हैं। काशी और प्रयागराज के मध्य की दूरी कुल 122 किलोमीटर है। इन दोनों सिद्ध क्षेत्र के बिल्कुल मध्य में अर्थात् वाराणसी से बाबा विश्वनाथ, मां अन्नपूर्णा और काल भैरव संकट मोचन से होते हुए 60 किलोमीटर की दूरी पर ज्ञानपुर विधानसभा क्षेत्र के भदोही जिले में जगापुर नामक गांव है। इतिहास की दृष्टि से देखने पर 16 महाजनपद के समय इस क्षेत्र की कई घटनाओं का उल्लेख मिलता है। काशी के इसी क्षेत्र में स्वयंभू शिव के प्रकट होने के कारण जगापुर ग्राम की प्रसिद्धि सिद्ध धर्म क्षेत्र के रूप में देश-विदेश में है। धार्मिक और आध्यात्मिक केंद्र के रूप में अवस्थित बाबा खाँखरनाथ पंचधाम मंदिर जगापुर में अवस्थित है। लोक कथाओं के अनुसार, इस सिद्ध मंदिर और ग्राम की इतिहास कथा-- इस प्रकार है :आज से हजारों वर्षों पूर्व की बात है, भारत-देश में सरयूपारीण ब्राह्मण जगानाथ जी थे। सभी प्रकार के आध्यात्मिक एवं शास्त्रीय विद्या में पारंगत श्री श्री 1008 स्वामी जगानाथ जी को अंतर-प्रेरणा से उत्तरकाशी से आगे हिमालय में ज्ञान साधना की प्रवृत्ति हुई। हिमालय में लंबी और कठिन साधना के पश्चात् उन्हें स्वप्न में शिवजी के ज्ञानज्योति रूपी दर्शन प्राप्त हुए। शिव जी ने कर्म साधना का उपदेश दिया तथा जगानाथ जी के उत्तरदायित्व में वेदों के यथार्थ रूप के संरक्षण हेतु एक मंदिर और शिक्षा केंद्र के निर्माण तथा संचालन का कार्य सौंपा। काशी से आगे चलते हुए शिव जी द्वारा निर्देशित क्षेत्र में

आचार्य श्री जय पाराशर

पहुंचने पर आपको एक अति प्राचीन आदि पीपल वृक्ष और आदि पीपल की जड़ से उत्पन्न अलौकिक स्वयंभू शिवलिंग के दर्शन हुए। यह पुण्य काशी नगरी का वही आधिकारिक क्षेत्र था, जहां सृष्टि की उत्पत्ति के प्रारंभ में स्वयं शिव साकार रूप में प्रकट हुए थे। जगानाथ जी ने वहीं पर शिव जी की सेवा अर्चना प्रारंभ की, जो वह अपने मृत्यु पर्यन्त नियमपूर्वक करते रहे। समय और सुविधा का अनुकूल संयोग होने पर आपने भारत के प्रसिद्ध विद्वान ब्राह्मणों को बुलाकर यहां एक गुरुकुल भी संचालित किया। इस क्षेत्र के उन्नयन में आपके योगदान को देखते हुए आपकी मृत्यु के पश्चात् कालांतर में उस पूरे गांव का नाम ही जगापुर रख दिया गया। वर्तमान समय में यहां पर गणेश जी महाराज, राम दरबार, दुर्गा माता, हनुमान जी और भोलेनाथ के भव्य मंदिर की स्थापना की गई है जिसमें जनगण के साथ-साथ जनप्रतिनिधियों का भी समय-समय पर भरपूर सहयोग मिलता रहा है। लोक कथाओं के अनुसार यहां के सिद्ध राम दरबार मंदिर में होने वाले राम कथाओं में स्वयं हनुमान जी भी समय-समय पर छद्म रूप में पधारते हैं और तुलसी बाबा ने भी कुछ समय इस क्षेत्र में बिताया था। मंदिर प्रांगण के क्षेत्र में ही एक सिद्ध ताल है। ऐसी मान्यता है कि शिवजी ने साकार रूप में इस ताल में स्नान किया था। इस कारण इस ताल में स्नान और विधि पूर्वक पूजा-पाठ आदि कर्मकांड करने पर सभी प्रकार के भौतिक और दैविक कष्टों तथा प्रारब्ध के दोषों से मुक्ति मिल जाती है। सत्य निष्ठ, तपस्वी, गौ-सेवक, अहिंसाव्रती, विनम्र, इंद्रिय-संयमी, ज्ञान प्राप्ति की सतत् साधना में तल्लीन सैकड़ों ब्राह्मण पीढ़ी परम्परा से आज भी यहां, भगवान शिव को अपना पूर्वज और गुरु मानकर--जटा-पाठ, माला-पाठ, शिखा-पाठ, रेखा-पाठ, ध्वज-पाठ, दंड-पाठ, रथ-पाठ, घन-पाठ के अतिरिक्त संहिता-पाठ, पद-पाठ, और क्रम-पाठ की साधना से वेदों के यथार्थ रूप को श्रुति परंपरा से अक्क्षुण रक्खा है। वर्तमान समय में इस सिद्ध मंदिर परिसर के व्यवस्थापकों में से एक पूज्य आचार्य श्री जय पाराशर जी का नाम देश-विदेश में अपने ज्योतिष गुणों के कारण चर्चा में रहता है। आचार्य श्री, गुरु शिष्य-परंपरा में ज्योतिष की सभी विधाओं में पारंगत हैं और विश्व विद्यालय द्वारा गोल्ड-मेडल से विशेष सम्मानित है।

आप सनातन परंपरा में वेद-वेदांग शास्त्र वर्णित सभी प्रकार के यज्ञ, आचार-विचार व सामाजिक जीवन के कर्तव्य-अकर्तव्यों और सभी प्रकार के दोष निवारण पूजा पाठ कर्म आदि के विषद् ज्ञाता हैं। इसके अलावा आचार्य श्री जय पाराशर जी, श्री शिवशंकर संस्कृत विद्यापीठ, चाणक्य गुरुकुलम् के व्यवस्थापक मंडलियों के मुख्य सदस्य और वेद-वेदांग पाठ्यक्रम परामर्श विशेषज्ञ भी हैं। आचार्य श्री का मुख्य संकल्प देश-विदेश में फैली सनातन संस्कृति के उपलब्ध प्रमाणों पर शोध करना और उनका प्रचार-प्रसार करना है।

भावान्तर योजना बनी मध्यप्रदेश के किसानों के सम्मान और समृद्धि की नई पहचान

धर्मेंद्र पाण्डेय

मध्यप्रदेश की धरती सदा से अन्नदाताओं की कर्मभूमि रही है। इन्हीं किसानों की मेहनत और समर्पण को सम्मान देते हुए राज्य सरकार ने ''भावान्तर भुगतान योजना'' को किसानों की समृद्धि का प्रतीक बना दिया है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में यह योजना अब सिर्फ एक सरकारी पहल नहीं रही, बल्कि किसान हितैषी शासन का प्रमाण बन चुकी है। हाल ही में देवास से मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सोयाबीन उत्पादक 1 लाख 33 हजार किसानों के खातों में 233 करोड़ रुपए की राशि सीधे अंतरित की। यह इस बात का प्रमाण है कि सरकार अपने वादों को धरातल पर उतारने के लिए कितनी प्रतिबद्ध है।मध्यप्रदेश देश का पहला राज्य है जिसने किसानों को उपज का उचित मूल्य दिलाने के लिए भावान्तर योजना लागू की। इस योजना के तहत किसानों को इस वर्ष सोयाबीन पर 500 रुपए प्रति क्विंटल का अतिरिक्त लाभ मिला, जिससे भाव 5300 रुपए से अधिक पहुंच गया। पारदर्शिता के लिए संपूर्ण प्रक्रिया ई-मंडी पोर्टल पर की जा रही है, जिससे किसान का डाटा, मूल्य निर्धारण और भुगतान सबकुछ ऑनलाइन और रियल-टाइम में निगरानी के साथ संचालित होता है।वर्ष 2026 को ''कृषि आधारित उद्योग वर्ष'' के रूप में मनाने का संकल्प लिया गया है। इससे खेती को उद्योग से जोड़कर किसानों की आय बढ़ाने के नए अवसर खुलेंगे। साथ ही, नरवाई जलाने की समस्या से निपटने के लिए कम्प्रेस्ड बायोगैस प्लांट लगाए जा रहे हैं, जो पर्यावरण संरक्षण के साथ ऊर्जा उत्पादन का भी माध्यम बनेंगे।

कृषि के साथ गोपालन और प्राकृतिक खेती को भी सरकार प्रोत्साहित कर रही है। डॉ. भीमराव अंबेडकर कामधेनु योजना के तहत डेयरी व्यवसाय शुरू करने वाले किसानों को 10 लाख रुपए तक की सब्सिडी दी जा रही है, जबकि जैविक खेती अपनाने पर प्रति एकड़ 4,000 रुपए का अनुदान दिया जा रहा है।महिलाओं के सशक्तिकरण को भी सरकार ने अपनी नीति का केंद्र बनाया है।

''लाड़ली बहना योजना'' में राशि बढ़ाकर 1500 रुपए प्रति माह कर दी गई है, जिससे ग्रामीण परिवारों की आर्थिक स्थिति मजबूत हो रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव का मानना है कि बहनों का सशक्तिकरण हमारी सनातन संस्कृति की पहचान है और जहां देवियों का वास है, वही प्रदेश समृद्धि की राह पर अग्रसर होता है।भावान्तर योजना ने न केवल किसानों के जीवन में स्थिरता लाई है, बल्कि मध्यप्रदेश को कृषि नवाचार का अग्रदूत बना दिया है। यह योजना बताती है कि जब नीति और नीयत दोनों सही हों, तो अन्नदाता की खुशहाली ही राज्य की सबसे बड़ी पूंजी बन जाती है।

मध्यप्रदेश की समृद्धि के लिए स्पेस टेक पॉलिसी 2025 बनेगी वरदान

- मध्यप्रदेश भारतीय सेना के साथ साइबर सुरक्षा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता में संयुक्त अनुसंधान करने वाला देश का पहला राज्य बना है

तन्मय जैन

मध्यप्रदेश अब तकनीकी समृद्धि के एक नए अध्याय में प्रवेश कर रहा है। एमपी टेक ग्रोथ कॉन्क्लेव 2.0 ने न केवल प्रदेश में तकनीकी निवेश के नए द्वार खोले हैं, बल्कि इसे भारत के उभरते टेक हब के रूप में स्थापित करने की दिशा में भी ठोस कदम बढ़ाया है। वहीं, मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा घोषणा की गई कि अब राज्य जल्द ही स्पेस टेक पॉलिसी 2025 लागू करेगा, जो सैटेलाइट डेटा, रिमोट सेंसिंग और स्पेस स्टार्टअप्स को नई ऊर्जा प्रदान करेगी। यह नीति मध्यप्रदेश को भारत की स्पेस अर्थव्यवस्था में अग्रणी बनाने की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल होगी।राजधानी भोपाल में 2000 एकड़ भूमि पर ''नॉलेज एंड एआई सिटी'' विकसित की जाएगी, जहां अनुसंधान केंद्र, शिक्षा संस्थान और स्टार्टअप्स मिलकर भविष्य की तकनीकी दिशा तय करेंगे। साथ ही साइंस सिटी प्रोजेक्ट के लिए 25 एकड़ भूमि आवंटित की जा रही है, जो युवाओं को प्रयोग, शोध और नवाचार के अनुकूल वातावरण

प्रदान करेगी। यह पहल ''एजुकेशन टू इनोवेशन'' की अवधारणा को साकार करेगी।एमपी टेक ग्रोथ कॉन्क्लेव 2.0 में 22 नई औद्योगिक इकाइयों के लोकार्पण और 4 प्रमुख परियोजनाओं के भूमिपूजन से 15,896 करोड़ रुपए के निवेश और 64,000 से अधिक रोजगार के अवसर सृजित होने जा रहे हैं। राज्य में एआई संचालित ड्रोन प्रौद्योगिकी उत्कृष्टता केंद्र की स्थापना, साइबर सुरक्षा को सुदृढ़ करने के लिए सीआईएसओ पोर्टल का शुभारंभ और भूमि प्रबंधन सहित अन्य क्षेत्रों के लिए ड्रोन डेटा रिपॉजिटरी का निर्माण ''डिजिटल मध्यप्रदेश'' की दिशा में ठोस कदम हैं।वहीं, मध्यप्रदेश अब भारतीय सेना के साथ साइबर सुरक्षा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के संयुक्त अनुसंधान करने वाला देश का पहला राज्य बन गया है। यह समझौता रक्षा और नागरिक क्षेत्रों के बीच तकनीकी सहयोग को सशक्त करेगा और एआई व साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में नए अनुसंधान अवसर खोलेगा।इन सबके इतर उद्योग जगत ने भी राज्य सरकार की निवेश अनुकूल नीतियों, सुदृढ़ अधोसंरचना, स्वच्छता और कुशल जनशक्ति को प्रदेश की सबसे बड़ी ताकत माना। इंदौर और भोपाल जैसे शहर अब ''टैलेंट हब'' के रूप में उभर रहे हैं, जहां तकनीकी कंपनियों और स्टार्टअप्स के लिए असीम संभावनाएं हैं।मध्यप्रदेश की ''स्पेस टेक पॉलिसी 2025'' केवल एक नीति नहीं, बल्कि एक दृष्टि है, जो राज्य को नवाचार, अनुसंधान और तकनीकी आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे ले जाएगी। यह नीति आने वाले वर्षों में न केवल प्रदेश के युवाओं को अवसर देगी, बल्कि भारत की तकनीकी उड़ान में मध्यप्रदेश को एक सशक्त पंख के रूप में स्थापित करेगी।

सड़कों से निकलने वाली धूल कोलकाता को करती है सबसे ज़्यादा प्रदूषित

निज संवाददाता : महानगर कोलकाता में कारों या फ़ैक्टरियों से निकलने वाला धुआं नहीं, बल्कि सड़कों से निकलने वाली धूल सबसे ज़्यादा प्रदूषण का कारण बनती है। द एनर्जी एंड रिसोर्सेज इंस्टीट्यूट (टीईआरआई) के एक अध्ययन में यह जानकारी सामने आई है। उस अध्ययन के अनुसार, गर्मियों और सर्दियों में सबसे ज़्यादा प्रदूषण सड़कों पर जमी धूल के कारण होता है। सड़कों पर जमी धूल हवा या वाहनों की आवाजाही के कारण हवा में मिल जाती है। आगे के विश्लेषण से पता चला है कि हवा में तैरते धूल के कणों (पीएम 10) का 35 फीसद हिस्सा सड़क की धूल से आता है। अति सूक्ष्म धूल कणों (पीएम 2.5) में 16 फीसद हिस्सा सड़क की धूल का होता है। विशेषज्ञों के अनुसार, पीएम 2.5 और पीएम 10 सबसे गंभीर प्रदूषक हैं, जो फेफड़ों में प्रवेश करते हैं और मानव शरीर में कई समस्याएं पैदा करते हैं। ऐसा माना जाता था कि कोलकाता में सबसे ज़्यादा प्रदूषण फ़ैक्टरियों और कारों से निकलने वाले धुएं के कारण होता है। लेकिन नए अध्ययन ने इस धारणा को बदल दिया है। उस अध्ययन से जो जानकारी सामने आई है, वह यह है कि आम तौर पर, साल भर तैरते धूल कणों में 10-12 फीसद हिस्सा कारों के धुएं का होता है। 15-18 फीसद अतिसूक्ष्म धूल कण कारों के धुएँ से आते हैं। 17 फीसद अतिसूक्ष्म धूल कण कारखानों से आते हैं। और पीएम10 के मामले में यह स्तर 14-16 फीसद है।अध्ययन में यह भी पाया गया कि सर्दियों में आवासीय क्षेत्रों से निकलने वाले धुएं की मात्रा बढ़ जाती है।

स्वामी मोहता पब्लिशिंग हाउस के लिए, प्रकाशक, मुद्रक : अजय कुमार मोहता द्वारा अरिहंत मुद्रा, 61, सूर्यसेन स्ट्रीट, कोलकाता-700009 से मुद्रित एवं प्रकाशित। **संपादकीय कार्यालय** : 10, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सरणी, (क्लाइब रो), 5बी मंजिल, रूम नं. 9, कोलकाता-700001, **स्थानीय कार्यालय** : 28-5 कन्वेंट रोड, मौलाली, कोलकाता-700014। **संपादक : अजय कुमार मोहता**, मो. 9830045693, E-mail-gambheersamachar@gmail.com. Website. www.gambheersamachar.in (प्रकाशित रचनाओं के चयन, संपादन हेतु पीआरबी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी, सभी कानूनी विवाद के लिए कोलकाता न्याय क्षेत्र)